अंक–1

मार्च, 2022

नया झरोखा

अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका

कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय द्वारा 23 नवंबर, 2021 को आयोजित हिंदी सलाहकार समिति की 13वीं बैठक में कार्मिक राज्य मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह के कर कमलों से कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) की अध्यक्ष सुश्री दीप्ति उमाशंकर को वर्ष 2019–20 के लिए राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया।

भारत सरकार

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि वर्ष के दौरान राजभाषा में सर्वाधिक कार्य निष्पादन हेतु राजभाषा शील्ड वर्ष 2019-20 कर्मचारी चयन आयोग नई दिल्ली को प्रदान की जाती है।

प्रदीप त्रिपाठी
(प्रदीप कुमार त्रिपाठी)
सचिव (कार्मिक)

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 23.11.2021

अंक–1 मार्च, 2022

नया झरोखा

कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) की अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका

संरक्षक एवं प्रेरणास्त्रोत

एस. किशोर, अध्यक्ष

मार्गदर्शक

अशोक कुमार, सदस्य
राजीव श्रीवास्तवा, सदस्य

संपादक मंडल

अशोक कुमार बवालिया,
उप–सचिव (प्रशासन/रा.भा)

राजेश तनेजा,
उप निदेशक (रा.भा.)

मनीष मृणाल, अवर सचिव
(नी. एवं यो.–II)

संपादक

रेखा वधावन,
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सहयोग

कृष्ण कुमार
अरुण कुमार गुप्ता
तसलीमा

प्रकाशन

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
12, सीजीओ कॉम्प्लेक्स,
लोधी रोड, नई दिल्ली

पत्रिका में प्रकाशित लेखों और रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। कर्मचारी चयन आयोग का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें उद्धृत आंकड़ों का संदर्भ अन्यत्र न करें।

क्र. सं.	विषय/शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	हिमाचल प्रदेशः अतुल्य नैसर्गिक सौंदर्य (पर्यटन)	प्रियंका बसु इंगटी	1
2	बिटिया (कविता)	रेखा वधावन	5
3	स्वास्थ्य का मूल मंत्र : 'योगी ही निरोगी है' (स्वास्थ्य)	राजेश तनेजा	6
4	आज़ादी का अमृत महोत्सव (कविता)	संजय प्रमाणिक	9
5	हृदय–आघात (हास्य–व्यंग्य)	विजय कुमार कोली	10
6	कोरोना का कहर (कविता)	अशोक कुमार वर्मा	12
7	ऑनलाइन शिक्षा का दौर (लेख)	अरुण कुमार गुप्ता	13
8	अस्मत (कविता)	राम सागर पंजियार	16
9	युद्ध करना पड़ता है/हौंसला (कविता)	तसलीमा	17
10	खम्ब थोईबी – एक मणिपुरी लोक नृत्य (संस्कृति)	सरस्वती सिंघा	18
11	जिन्दगी की हमसफ़र साइकिल (कविता)	रामकेश मीणा	20
12	आपदा से सीखें और सुरक्षित भविष्य की तैयारी करें (निबंध)	करण तनेजा	21
13	काँच का दरवाज़ा (कहानी)	सुरभि सामरिया–चितलांगी	23
14	जीत भी जाऊँ तो क्या पाऊँगा (कविता)	मनीष कुमार	25
15	डिजिटल माध्यमों/साधनों से बदलती दुनिया (लेख)	राकेश कुमार	26
16	सूरज (कहानी)	अरुण कुमार हुई	29
17	सत्यनिष्ठा वर्तमान समय की मांग (लेख)	कपिल कुमार	31
18	माँ की महिमा (कविता)	देव नाथ यादव	34

एस. किशोर, भा.प्र.से.
अध्यक्ष
S. KISHORE, I.A.S.
Chairman

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
Government of India
Staff Selection Commission
ब्लॉक सं. 12, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड़, नई दिल्ली - 110003
Block No. 12, CGO Complex,
Lodhi Road, New Delhi - 110003

संदेश

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) अपनी अर्धवार्षिक हिंदी ई–गृह पत्रिका "नया झरोखा" का पहला अंक प्रकाशित करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने में कर्मचारी चयन आयोग हमेशा अग्रणी रहा है और कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग से वर्ष 2016–17, 2017–18 एवं 2019–20 की राजभाषा शील्ड मिलना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सरकारी कार्यालयों में प्रकाशित की जाने वाली हिंदी पत्रिकाएं न केवल राजभाषा हिंदी को सहज एवं सरल रूप से प्रचारित करने का प्रयास करती हैं अपितु सभी सरकारी कर्मियों को भी अपने भावों–विचारों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती हैं। यह बहुत हर्ष का विषय है कि इस पत्रिका हेतु न सिर्फ आयोग मुख्यालय बल्कि आयोग के क्षेत्रीय/उप–क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भी बढ़–चढ़कर अपना योगदान दिया है जो अत्यंत उत्साहवर्धक है। मुझे पूरा विश्वास है कि "नया झरोखा" पत्रिका हमारे कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने का एक सफल माध्यम सिद्ध होगी ।

अंत में मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल, रचनाकारों एवं पाठकों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं, इस आशा के साथ कि "नया झरोखा" पत्रिका की यह साहित्यिक यात्रा अनवरत चलती रहेगी ।

एस. कि

(एस. किशोर)

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अशोक कुमार
सदस्य
ASHOK KUMAR
MEMBER

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
Government of India
Staff Selection Commission
ब्लॉक सं 12, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड़, नई दिल्ली - 110003
Block No. 12, CGO Complex,
Lodhi Road, New Delhi -110003

मुझे हर्ष है कि कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) अपनी अर्धवार्षिक हिंदी ई–गृह पत्रिका "नया झरोखा" प्रकाशित कर रहा है। विभागीय पत्रिकाएं परस्पर संवाद, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़े विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्त करने और ज्ञान एवं सूचनाओं के आदान–प्रदान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से तो बेहतर होती ही हैं साथ ही अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचनात्मकता एवं अभिव्यक्ति के लिए एक मंच अथवा माध्यम भी प्रदान करती हैं।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका उन सभी कार्मिकों को अपनी प्रतिभा दर्शाने में मार्गदर्शन करेगी जिनके पास सृजनात्मक क्षमता है और जिन्हें लेखन में अभिरूचि है। हिंदी हमारी मातृ–भाषा है और हमारी राजभाषा भी है। यह संपूर्ण राष्ट्रीय विचारों एवं भावों को वहन करने में समर्थ है। इसमें अभिव्यक्ति करना सहज और सरल है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ कार्यालयीय कार्य को हिंदी में करने के प्रति उनकी रूचि में भी संवर्धन होगा।

मैं पत्रिका के साथ जुड़े आयोग मुख्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के उन सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका में किसी न किसी रूप में योगदान दिया है और आशा करता हूँ कि वे भविष्य में भी अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय देते रहेंगे ।

पत्रिका के निरंतर प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अशोक कुमार)

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

राजीव श्रीवास्तवा
सदस्य
RAJIV SRIVASTAVA
MEMBER

भारत सरकार
कर्मचारी चयन आयोग
Government of India
Staff Selection Commission
ब्लॉक सं 12, केन्द्रीय कार्यालय परिसर,
लोधी रोड़, नई दिल्ली - 110003
Block No. 12, CGO Complex,
Lodhi Road, New Delhi -110003

संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) अपनी अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका "नया झरोखा" का प्रकाशन शुरू कर रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में हमारे कार्मिकों की भूमिका का दर्पण तो बनेगी ही, साथ ही आयोग के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को भी अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित करेगी।

हिंदी विश्व की सबसे प्रचलित भाषाओं में से एक है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी भाषा बोली, समझी और लिखी जाती है। अमरीका, कनाडा, ब्रिटेन आदि देशों में भी हिंदी भाषियों की बड़ी संख्या मौजूद है। हिंदी व्याकरण सम्मत भाषा है तथा इसकी शब्द संपदा भी प्रचुर है जिससे इसमें सरलता से भावों को व्यक्त करने की क्षमता है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी के लिए हिंदी का प्रयोग करना गौरव की बात है।

मैं संपादक मंडल सहित आयोग (मुख्यालय) तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके योगदान से इस पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन होना संभव हो पाया है। यह पत्रिका सफलता के नए सोपान प्राप्त करे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राजीव श्रीवास्तवा)

संपादकीय

आयोग की अर्धवार्षिक ई–गृह पत्रिका 'नया झरोखा' का यह अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। संवेदन और प्रति–संवेदन के मुख्य घटक के रूप में भाषा एक मुख्य भूमिका अदा करती है। अभिव्यक्ति का यह एक सशक्त माध्यम है; विशेष रूप से वर्तमान संदर्भ में, जबकि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्रांति विस्फोट युग में भाषा का तत्व गड्ड–मड्ड हो कर नये–नये रूपाकारों में हमारे सम्मुख प्रस्तुत है। आज लेखन और पठन–पाठन कहीं पीछे छूटता जा रहा है और वाचक और दर्शक आमने–सामने हैं। भाषा लिखित रूप में शनैः शनैः पृष्ठभूमि में चली गई है। लेखक और पाठक के बीच की खाई को पाटने का प्रयास है यह पत्रिका।

एक और बिंदु की ओर मैं आप सबका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं। संयुक्त परिवारों में अभिव्यक्ति बहुत मुखर हुआ करती थी। एकल परिवारों में इसका अभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है। इसीलिए अभिव्यक्ति को पुनः सशक्त किए जाने की बहुत आवश्यकता है।

'नया झरोखा' के इस अंक में आपको अपने ही मध्य के सहकर्मियों एवं अधिकारियों की रचनाशीलता के दर्शन होंगे। पत्रिका के प्रस्तुत अंक में एक ओर हिमाचल प्रदेश के नैसर्गिक सौन्दर्य का वर्णन है वहीं दूसरी ओर वर्तमान महामारी कोरोना पर एक बहुत ही मर्मस्पर्शी कविता 'कोरोना का कहर' भी है। पत्रिका में इसके अलावा 'हृदय–आघात' शीर्षक से दैनिक दिनचर्या पर एक सटीक हास्य–व्यंग्य भी है। इसी प्रकार भारत सरकार के वर्तमान कार्यक्रम 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय पर एक कविता को भी स्थान दिया गया है। निःसंदेह ये रचनाएं आप सबको भी अपने भीतर सोई हुई रचनाधर्मिता और क्षमता को पुनः जागृत करने के लिए प्रेरित करेंगी। कविता हो अथवा लेख–निबंध या फिर कोई संस्मरण–आपको अपने ही भीतर के उस विस्मृत कक्ष के द्वार खोलने में सहायता करेंगे जिसमें दैनंदिन सरकारी काम–काज और फ़ाइलों की धूल ने जंग लगा दिया है।

अंत में, यही कहना चाहूंगी कि वर्तमान के संक्रांति–काल में, जब संबंधों की ऊष्मा और गरिमा खो रही है, औपचारिकताएं अपनेपन को अस्ताचल में भेज रही हैं और दिन–त्यौहार महज लेन–देन का माध्यम बन कर रह गए हैं– आइए, इस पत्रिका के माध्यम से फिर से एक–दूजे से जुड़ें, स्वयं को मुखरित करें और कुछ पल के लिए ही सही, थोड़ा हल्का हो लें। यही इस पत्रिका का उद्देश्य है और आप सबसे जुड़ने–मिलने का माध्यम भी।

–रेखा वधावन
संपादक

हिमाचल प्रदेशः अतुल्य नैसर्गिक सौंदर्य

हिमाचल प्रदेश अपनी विविधता और प्राकृतिक सुंदरता के कारण एक शानदार पर्यटन स्थल है। यही कारण है कि हिमाचल में हर साल देशभर से बड़ी संख्या में पर्यटक अलग–अलग जगहों से घूमने आते हैं। यह निसंदेह गर्मियों के लिए सबसे अच्छे पर्यटन स्थलों में से एक है। हिमाचल प्रदेश में मनाली, शिमला, डलहौजी और कई जगहों पर अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता शांत परिदृश्य का अनुभव कर सकते हैं। यहां की प्राकृतिक छटा तस्वीर की तरह किसी भी मनुष्य के दिल और दिमाग में अपनी अविस्मरणीय छाप छोड़ देती है। 'हिमाचल में हिमालय' या 'हिमालय में हिमाचल' चाहे जो हो, यहाँ का प्राकृतिक दृश्य देख इसकी अविस्मरणीय सौन्दर्य से पूरी दुनिया अचंभित हो जाती है। हिंदी में 'हिम' का शाब्दिक अर्थ है 'बर्फ' और 'आलय' का अर्थ है 'घर' अर्थात हिमालय का अर्थ है –'हिम का घर' और वहीं से हिमाचल का अर्थ हुआ 'बर्फ की भूमि'।

कुल्लू में बर्फीले पहाड़ों से उतरकर हिमाचल की घाटियों के बीच बहती हुई ब्यास नदी अत्यंत मनभावन लगती है। ब्यास नदी का पानी बहुत साफ और निर्मल है। पत्थरों से टकराकर इसके बहने की आवाज किसी संगीत से कम नहीं लगती। ऐसा लगता है मानो ब्यास नदी अपने स्वच्छ जल से पर्यटकों के पांव पखार कर उनका स्वागत कर रही हो।

मसरूर में अपनी अद्भुत संरचना लिए रॉक मंदिर है जो कांगड़ा से 32 किलोमीटर और धर्मशाला से 47 किलोमीटर दूर है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण पांडवों ने करवाया था। साथ ही मंदिर के सामने की झील को पांडवों ने अपनी पत्नी द्रौपदी के लिए बनवाया था। मंदिर के सामने झील का प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोहारी लगता है।

निचले हिमालय की सबसे सुरम्य घाटियों में से एक के रूप में पहचाने जाने वाली कांगड़ा घाटी हरियाली से भरी हुई है, जो अन्य जगहों पर देखे जाने वाले प्राकृतिक दृश्य एक अलग और जबरदस्त विपरीतता प्रस्तुत करती है। यह क्षेत्र कला और शिल्प के लिए प्रसिद्ध है। यहां स्थित कांगड़ा किला कांगड़ा शहर के बाहरी इलाके में और धर्मशाला से 20 किलोमीटर दूर स्थित है। यह किला हजारों वर्षों की भव्यता आक्रमण युद्ध धन और विकास का साक्षी है। कांगड़ा की यात्रा के लिए सितंबर से जून तक का समय सबसे अच्छा माना जाता है। इस क्षेत्र के उत्कृष्ट रूप से डिजाइन किए गए शॉल और चित्र जैसे शिल्पों की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहना की जाती है। कांगड़ा घाटी में स्थित प्रागपुर एक छोटा सा शहर है और यह भी एक लोकप्रिय पर्यटक स्थल है। बेनेर और मांझी नदियों के संगम पर कांगड़ा शहर अपने मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। सबसे उल्लेखनीय है कि यह देवी ब्रजेश्वरी को समर्पित मंदिर है। कांगड़ा इतिहास में डूबा है और इसके किले के

खंडहर अवशेष हमें इतिहास में स्वतः ही लेके चले जाते हैं।

अनंतपुर गढ़ के शिखर पर कंचना माता का भव्य मंदिर स्थित है। यह सरकाघाट अनुमंडल के धर्मपुर तहसील के अंतर्गत आता है। भौगोलिक दृष्टि से यह स्थान जनजीवन के लिए बहुत कठिन हुआ करता था। कुछ समय पहले इस जगह तक पहुंचने का एक ही रास्ता था जो काफी संकरा और जोखिम भरा था, लेकिन अब नया रास्ता बनाया गया है जो सुरक्षित और करीब 1200 सीढ़ियों से बना है। मंदिर के आसपास का नजारा बेहद मनमोहक लगता है। हिमाचल की सुंदरता की बात हो तो पराशर झील का जिक्र होना स्वाभाविक है जो प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है। यह हिमाचल के मांडी जिले में 2730 मीटर ऊंचाई पर स्थित है। इस स्थान को पराशर ऋषि की उत्पत्ति के स्थान के रूप में जाना जाता है। यह स्थान स्थानीय आस्था के साथ–साथ पर्यटकों के लिए भी विशेष आकर्षण का केंद्र है।

परंपरागत रूप से हिमाचल को ग्रीष्मकालीन पर्यटन के रूप में जाना जाता था परंतु हिमाचल प्रदेश के पर्यटन और नागरिक उड्डयन विभाग ने हिमाचल प्रदेश को अन्य मौसमों में भी पर्यटकों के लिए अनुकूल बनाने एवं पर्यटन को आकर्षित करने के उद्देश्य से विविध रूप से पर्यटन का विकास करने हेतु विशेष प्रयास किए हैं जिसके परिणाम स्वरूप सभी मौसमों में हिमाचल जाया जा सकता है। दरअसल, पर्यटन विभाग ने पर्यटन के विकास और नए गंतव्यों को खोलने पर विशेष जोर दिया है। ग्रामीण इलाकों और अनछुए क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध संसाधनों में उपयुक्त बुनियादी ढांचे का विकास किया जा रहा है। गुणवत्तापरक पर्यटकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थाई पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है और निजी क्षेत्र को मौजूदा पारिस्थितकी और पर्यावरण को परेशान किए बिना राज्य में पर्यटन से संबंधित बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास भी किया जा रहा है। जिसके कारण हिमाचल हर मौसम में पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

हिमालयी मौसम के केंद्र में "देवभूमि" के रूप में यह अत्यंत अनुकूल पर्यटन स्थल है। धर्मशाला जाते समय ऐसा लगता है जैसे कोई तिब्बतियों के निवास वाले देश में गया हो। आत्मीयता से परिपूर्ण वहां की मिट्टी मानो वास्तव में पर्यटकों का स्वागत करती है पश्चिमी हिमाचल क्षेत्र में स्थित धर्मशाला अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ–साथ बौद्धों के लिए विशेष महत्व रखता है।

सबसे आश्चर्यजनक और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण हिल रिसॉर्ट्स में से एक शिमला उत्तर भारत के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशन में से एक है। यह 2205 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह ब्रिटिश भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी। अक्सर सुबह–सुबह धुंध में नहाता और औपनिवेशिक युग के अवशेष अपने में समेटे पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। शिमला की खूबसूरत वादियों में घूमना किसी सपने से कम नहीं लगता। धुंध में ऐसा मालूम होता है जैसे हम बादलों में चल रहे हों।

हिमाचल प्रदेश में कुल्लू घाटी के उत्तरी छोर पर 1926 मीटर की ऊंचाई पर स्थित मनाली अपने अविश्वसनीय परिदृश्य, प्रचुर मात्रा में हरियाली और पर्यटकों के लिए एक जादुई आकर्षण का केंद्र है। हरे–भरे पहाड़ों में बारहमासी जलप्रपात पर बहती धाराओं के साथ मनाली की सुंदरता हिमाचल प्रदेश के इस अद्भुत शहर में आने वाले लोगों को अत्यंत प्रिय है। कुल्लू घाटी देवताओं की घाटी के रूप में जानी जाती है।

राजसी पहाड़ियों और हरी–भरी हरियाली के बीच बसा मैकलोडगंज धर्मशाला के पास स्थित एक खूबसूरत शहर है यह विश्व प्रसिद्ध तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा का घर होने के लिए प्रसिद्ध है। वहीं दूसरी ओर सोलन को भारत के मशरूम शहर के रूप में जाना जाता है क्योंकि यह देश में मशरूम का सबसे बड़ा उत्पादक है और इसमें मशरूम अनुसंधान निदेशालय भी है। इस शहर का नाम हिंदू देवी के नाम पर पड़ा है।

हिमालय श्रृंखला के पास स्थित कुफरी शिमला से 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक रमणीय हिल स्टेशन है। कुफरी का अर्थ है 'झील'। एक सकारात्मक ऊर्जा के साथ बर्फ से ढकी चोटियों और कभी ना खत्म होने वाली घाटियों के प्रीज्मीय दृश्य, सर्दियों में स्केटिंग और स्लेजिंग जैसी गतिविधियों के साथ कुफरी आपको इस तरह से आकर्षित करेगा कि आप इसे कभी छोड़ कर आना नहीं चाहेंगे।

चंबा जिले में बर्फ से ढके पहाड़ों से हीरा धौलाधार पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी छोर पर स्थित डलहौजी का भी अपना आकर्षण है। फूलों के घास के मैदान में बारहमासी वृक्षों के साथ हरे भरे पहाड़ों की गोद में बसा है चंबा। खज्जियार रमणीय चंबा घाटी में बसा एक छोटा सा घास का मैदान है। मंत्रमुग्ध कर देने वाले यहाँ के प्राकृतिक दृश्य के कारण ही खज्जियार को 'स्विट्जरलैंड ऑफ द ईस्ट' कहा जाता है। रोहतांग और बरलाचा दर्रे की सुंदरता भी अद्भुत है। ऐसा लगता है, जैसे पूरी दुनिया सफेद चादर से ढक गई हो।

किन्नौर एक सपनों के शहर की तरह लगता है। किन्नौर विशेष रूप से अपने सेबों के लिए प्रसिद्ध है। रॉयल गोल्डन एप्पल इस जिले का एक प्रमुख आकर्षण है। यहां आप सेब के बगीचों के मनोरम दृश्य का आनंद ले सकते हैं, जिसके साथ सुंदर बास्पा नदी बहती है। सतलुज नदी हिमाचल में शिपकी (भारत–चीन सीमा) में प्रवेश करती है और दक्षिण–पश्चिम दिशा में किन्नौर, शिमला, कुल्लू, सोलन, मंडी और बिलासपुर जिलों से होकर बहती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, शक्तिशाली हिमालय पर्वतमाला भगवान शिव का पवित्र निवास स्थान है, जहां वे अपनी पत्नी देवी पार्वती के साथ रहते हैं। माना जाता है कि किन्नर कैलाश वही स्थान है जहां देवता निवास करते हैं। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में किन्नर कैलाश रेंज समुद्र तल से 17200 फीट की ऊंचाई पर भारत–तिब्बत सीमा के निकट स्थित है। बास्पा घाटी में, सांगला नामक विचित्र शहर है जो अपने विशाल आकर्षण के कारण पर्यटकों का दिल हर लेता है। स्वाभाविक रूप से समृद्ध, विचारोत्तेजक रूप से गहरी, सांगला घाटी बास्पा नदी के किनारे ढलानों पर स्थित है।

हिमाचल के कई छोटे छोटे शहर अपनी सुंदरता और पौराणिक महत्व के कारण सुप्रसिद्ध हैं। सुंदर पर्वतीय घाटी में स्थित मणिकरण छोटा शहर जरूर है किंतु हिंदुओं और सिखों दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है। नग्गर 1851 मीटर की ऊंचाई पर ब्यास नदी के तट पर स्थित एक प्राचीन शहर है। यह प्राचीन शहर घाटी के उत्तर पश्चिम में एक अद्भुत प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करता है। नाहन निर्विवाद रूप से सबसे खूबसूरत परिदृश्य वाला एक छोटा शहर है लेकिन यह अपने समृद्धि इतिहास और विरासत के लिए पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करता है। पालमपुर कांगड़ा घाटी में स्थित एक सुंदर पहाड़ी शहर है जो चारों तरफ से चाय के बागानों, गरजती धाराओं, देवदार के पेड़ों और अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ है।

हिमाचल प्रदेश की नैसर्गिक सौंदर्य को करीब से देखना हो तो कालका शिमला हेरीटेज रेलवे लाइन पर चलने वाली कालका मेल की सवारी करना निश्चित रूप से आपको प्रकृति के करीब ले जाएगी। मनोरम वादियों और ऊंचे–ऊंचे चीड़ के दूर तक फैले पेड़ों से घिरे हिमाचल प्रदेश की खूबसूरती की बात ही निराली है। उत्तर–पश्चिमी भारत में स्थित इस राज्य की नदियां, पहाड़ और खूबसूरत हरियाली सर्वोत्कृष्ट अनुभव प्रदान करती है। हिमाचल प्रदेश रमणीय प्राकृतिक दृश्यों को अपने आँचल में समेटे हुए अतुल्य भारत का वास्तविक दर्पण है।

– प्रियंका बसु इंगटी
क्षेत्रीय निदेशक,
कर्मचारी चयन आयोग(पूर्वी क्षेत्र)

बिटिया

थोड़ी खट्टी, थोड़ी मीठी, थोड़ी नमकीन हो,
क्या कहूं मैं बिटिया, तुम क्या चीज हो।
जब से आई हो जीवन खुशहाल सा है,
ज़िंदगी में कुछ मकसद कुछ धमाल सा है।
सारा दिन तुम मुझको नचाती हो,
मीठी बातें करके मुझको लुभाती हो।
खुशियों में तुम मेरी शामिल हो जाती हो,
मेरी तन्हाईयों में तुम मेरे साथ हो जाती हो।
ऐसी लगती हो तुम बेटा, जैसे चाय में चीनी,
तुम्हें देख जीवन में आती, खुशबू भीनी–भीनी।
कोमल–सा स्पर्श तुम्हारा, हर दर्द भगा देता है।
नई उमंग, नई आस्था, नया विश्वास जगा देता है।
हर रंग मुझे दिखता है, तुम में,
तुमने मेरे जीवन को रंगों से भर डाला है।
तुम्हें देखती हूं तो छाती, ममता से भर जाती है,
खुशियां तेरी देख के गुड़िया, आंखे नम हो जाती हैं।
एक दिन छोड़कर जब हमको चली जाओगी,
तेरे गुड्डे गुड़िया से हम खेला करेंगे।
तेरा पहला बोल, पहला कदम, सब याद आएंगे।
तेरी नन्हीं शरारतें, तेरी तोतली बातें,
याद आएंगी हमें वो अधजगी सी रातें।
वो तुम्हें चंदा दिखाकर, उसे मामा बतलाना,
तुम्हारी चांद लेने की जिद्द पर, तुम्हें बहलाना।
कद में मुझसे ऊंची होकर भी, सीने से लग जाना,
कैसा है माँ–बेटी का नाता,
ये माँ बनकर मैंने जाना।

–रेखा वधावन
सहायक निदेशक (राजभाषा)

स्वास्थ्य का मूल मंत्र : 'योगी ही निरोगी है'

एक प्रसिद्ध कहावत है "स्वास्थ्य ही धन है"। कोई भी व्यक्ति स्वस्थ और रोग–रहित रह सकता है यदि वह कुछ नियमों और दिनचर्या का पालन करे। यह भी कहा जाता है कि "स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क होता है"। यह हमारे मस्तिष्क को स्वस्थ रखता है और हमें चुस्त रखता है। जब हम पैदा होते हैं तो हम एकदम स्वस्थ होते हैं लेकिन धीरे–धीरे हमें अनेक बीमारियां होने लगती हैं जो हमें रोगी बना देती हैं। आज के समय मे गंभीर बीमारियों ने हम लोगों को घेर लिया है, छोटे हो या बड़े कोई भी इन बीमारियों से अछूता नहीं है, ऐसे में हमें योग को अपनाने की जरूरत है। योग का मतलब शरीर तथा दिमाग का मिलन है। योग हमें कई बीमारियों से बचाने में मदद करता है जैसे – ब्लड प्रेशर सही रखना और तनाव से निजात दिलाना।

योगी ही निरोगी है, यह कथन अपने स्वरूप में पूर्णतः सत्य और वास्तविक है। पर योगी है कौन? मेरे विचार मे जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों को शांत करने की प्रविधियों व आचरण में संलग्न है, वही योगी है। कृष्ण ने कहा है योगस्थ या योगारूढ़ व्यक्ति वह है जो स्थितप्रज्ञ है और जो नींद में भी जागा हुआ रहता है।

योग का इतिहास इतना पुराना है कि यह सृष्टि के निर्माण से ही विद्यमान है। भगवद गीता को भी योग ग्रंथ कहा जाता है, जिसमें कहा गया है योग के विभिन्न मार्ग है जो हर किसी के लिए भिन्न हो सकता है, लेकिन योग के ये विभिन्न मार्ग (योग के प्रकार) एक ही मंजिल व लक्ष्य तक लेकर जाते हैं। आप अपने स्वभाव, अपनी रूचि, अपनी शारीरिक व मानसिक अवस्था आदि के अनुसार किसी भी मार्ग या योग के प्रकार को चुन सकते हैं।

एक समय था जब श्रम को बहुत हल्का, छोटा और निकृष्ट काम मान लिया गया। एक समय था, महिलायें अपने घर में ही स्वयं आटा पीसा करती थीं, कूएं से पानी भर लाती थीं, घर की पूरी सफाई करती

थीं। उन्हें इस काम में बहुत श्रम करना पड़ता था किन्तु इसका परिणाम यह होता कि घर में कभी डॉक्टर बुलाने की जरूरत नहीं पड़ती। हमारी प्रत्येक कोशिका को रक्त की जरूरत होती है और रक्त श्रम के बिना पहुंचता नहीं है। क्या बहुसंख्यक लोग कभी आसन करते हैं? व्यायाम करते हैं? प्राणायाम करते हैं? नहीं, शायद हम इसे जरूरी नहीं मानते। आसन और व्यायाम के बिना

शरीर को उचित मात्रा में रक्त उपलब्ध नहीं होता। हर अवयव तक रक्त नहीं पहुँच पाता। आसन, व्यायाम और प्राणायाम, ये तीनों शरीर को स्वस्थ रखने की अनिवार्य अपेक्षाएँ हैं। श्रम और व्यायाम शरीर में नई ताजगी भरते हैं।

स्वास्थ्य का दूसरा बिन्दु है – इंद्रियों की उच्छृंखलता पर नियंत्रण– आज का युग इंद्रियों की उच्छृंखलता का युग है। इंद्रिय–संयम को आज पुराने जमाने की बात कहा जा रहा है। आज मुक्तता की सर्वत्र चर्चा हो रही है। देश मुक्त हो, इतना ही नहीं, हर व्यक्ति मुक्त हो, ऐसी बात कही जा रही है। पश्चिमी देशों ने वैज्ञानिक प्रगति तो बहुत की है किन्तु इंद्रिय–संयम की अवहेलना भी उसी अनुपात में की है। आज उसके परिणाम सामने आ रहे हैं। हिंदुस्तान में उतना पागलपन नहीं है जितना वहां है। जहां मुक्त यौनाचार होगा, इंद्रियों की उच्छृंखलता होगी, इंद्रियों के प्रति संयम बरतना पुराने जमाने की बात मानी जाएगी, वहां बीमारियों का तेजी से बढ़ना स्वाभाविक है और आज वैसा ही हो रहा है।

प्रसिद्ध योग गुरु बाबा रामदेव के अनुसार भी मनुष्य को निरोगी रहने के लिए नियमित रूप से प्राणायाम करना चाहिए। वास्तव में निरोग रहने का मूल मंत्र है प्राणायाम। योगी व्यक्ति ही निरोगी बनकर कर्मयोगी व पुरुषार्थी बनता है। प्राणायाम से 99 प्रतिशत बीमारियों पर कंट्रोल ही नहीं होता बल्कि क्योर भी हो जाता है। इंटरनल एक्सरसाइज़ है कपालभाति लोगों को नियमित रूप से कपालभाति प्राणायाम करना चाहिए। इससे एकसाथ सभी अंगों का व्यायाम होता है। इससे गैस, कब्ज, एसिडिटी आदि मे लाभ होता है। इससे चेहरे पर चमक आ जाती है। अनुलोम–विलोम से दिमाग तेज होता है।

योग दर्द दूर करने मे भी सहायक है, स्ट्रेचिंग तकनीक कई प्रकार के विषैले पदार्थों का संतुलन बनाने का काम करती है, इससे शरीर के सर्कुलर सिस्टम मे सुधार आता है और आपको दर्द का एहसास कम होता है, शरीर मे रक्त का संचार भी बेहतर ढंग से होता है और शरीर तेजी से ठीक होता है। तीस की उम्र के बाद कार्डियो वैस्क्यूलर बीमारियां हमें घेरने लगती हैं, इससे दिल की बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। योग करने से कार्डियो सेहत सुधरती है। श्वास प्रक्रिया को नियंत्रित कर योग हमारी धड़कनों को नियंत्रित करने में मदद करता है। योग करने से हमारा दिल स्वस्थ रहता है। योग हमारे मन में चल रही उथल पुथल को कम करता है और हमारे मन को शांत करता है। योग करकर आप अपना वजन भी कम कर सकते हैं। योग करने

से हमारी त्वचा पर भी निखार आता है। योग एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है जिसमें आपको वैयक्तिक, सामाजिक, व्यवहारिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक स्वास्थ्य, रोगों से बचाव, आध्यात्मिक विकास और जीवन के अंतिम और परम लक्ष्यों की प्राप्ति के उपाय क्रमानुसार बताए गए हैं। कैसे एक साधारण व्यक्ति योग के मार्ग पर चलकर अपने जीवन को बदल सकता है, आदर्श जीवन जी सकता है।

निष्कर्ष :

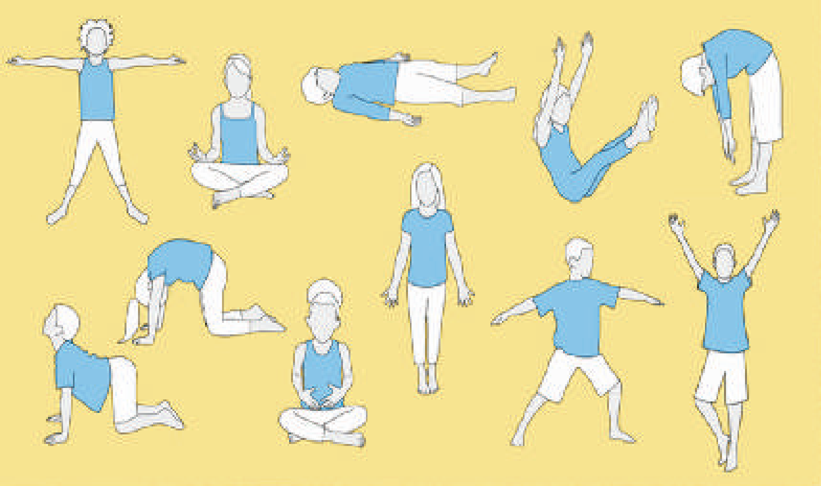

शरीर का निरोग होना ही सबसे बड़ा सुख है। यदि शरीर बीमार और अस्वस्थ है तो सुखों के सारे साधन होते हुए भी वह दुखी ही रहेगा, इसलिए हर इंसान को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होना बेहद जरूरी है। वस्तुतः उसे योगी की भांति स्वास्थ्य नामक लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सतत् प्रयास करना चाहिए यही स्वास्थ्य का मूल मंत्र है।

—राजेश तनेजा
उप निदेशक (राजभाषा), कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

आजादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त 1947 है अंग्रेजों से लड़ाई का अवशान
भारतीयों को मिला आजादी का खुला आसमान!
यहां से शुरू हुई है यात्रा आजाद भारत की
तब से ही जारी है प्रयास आत्मनिर्भर देश के गठन की!
एक–एक करके 74 साल बीत गए
हम लोग आज स्वतंत्रता के 75वें साल में पहुंच गए!
आज आजादी से मिली अमृत सुख को साकार करने की बारी
आज आजादी के अमृत महोत्सव को पालन करने की बारी!
स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का स्मरण करना कर्तव्य हमारा
वीरों के त्याग और देश भक्ति से सुसज्जित है इतिहास हमारा!
जो देश भक्ति की खातिर लड़ गए आजादी का रण
अनेकता में भी एकता के सूत्र में बंधे हैं भारत के नागरिक गण!
शहीदों के आदर्श से युवाओं को मिलेगा ऐसा जोश
तिरंगे को रखेंगे सदैव सबसे ऊंचा और अपने आगोश!

– श्री संजय प्रमाणिक
सहायक निदेशक
कर्मचारी चयन आयोग(पूर्वी क्षेत्र)

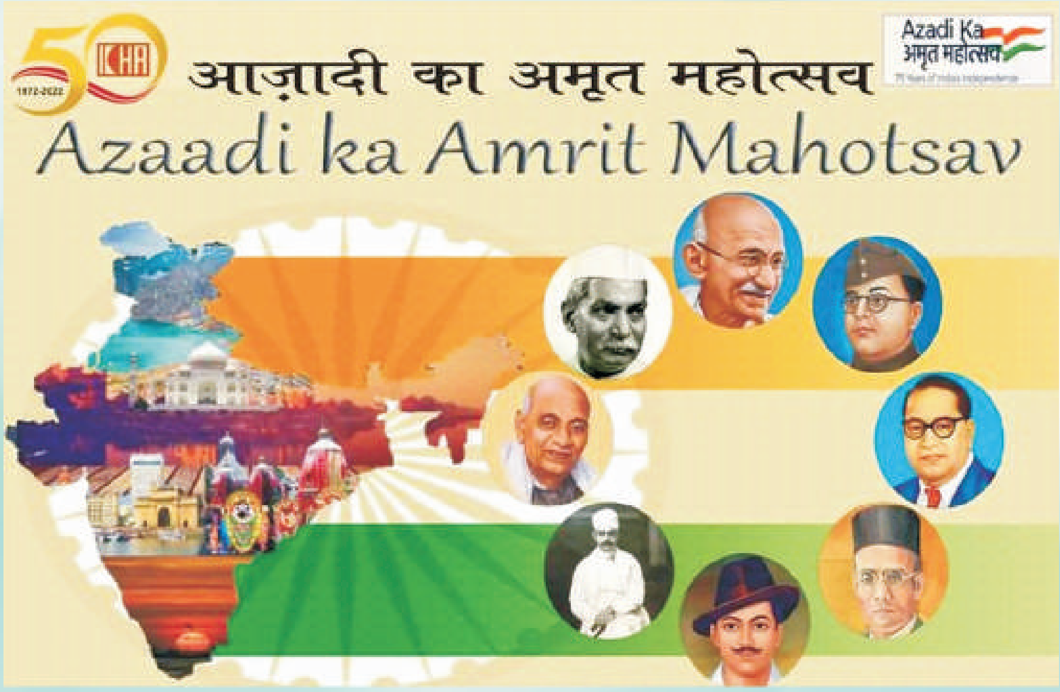

हृदय–आघात

कुछ वर्षों पूर्व की बात है – श्री विजय कुमार कोली एक सरकारी कार्यालय में बाबू के पद पर कार्यरत थे। प्रत्येक माह अच्छा वेतन प्राप्त करने के पश्चात भी संतुष्ट नहीं रह पाते थे। कारण पूछने पर पता चला कि वह अपने गृह के आवश्यक एवं अनाप–शनाप व्ययों से दुखी थे। प्रत्येक दिवस उनको किसी न किसी बिल का भुगतान करना पड़ रहा था, जैसे – विद्युत बिल, पानी का बिल, अखबार–बिल, दूध वाले का बिल, राशन का बिल, मोबाईल रिचार्ज करवाने का बिल, बनिये का बिल, वाहन–मकान क्रय करने के बाद की मासिक किश्तों का बिल, बच्चों की पढ़ाई इत्यादि के बिल, डिश– टीवी का बिल, घरेलू–गैस का बिल एवं परिवार संग मनोरंजन इत्यादि पर आने वाले अन्य प्रकार के बिलों के साथ–साथ इत्यादि बिल।

उपरोक्त नाना प्रकार के बिलों का भुगतान करते रहने के कारण वह अवसाद की स्थिति में आ चुके थे। बढ़ती हुई महंगाई के कारण श्री कोली अपने सीमित संसाधनों के रहते परिवार का भार–वहन करने में अक्षम हो चुके थे। आखिरकार उन्होंने तंग आकर आत्महत्या करने का गंभीर निर्णय ले लिया।

अगले दिन प्रातः चार बजे उठकर स्नान–ध्यान करने के उपरांत समय से पूर्व ही कार्यालय में आ पहुंचे। सभी कर्मचारी हैरान थे कि रोज देरी से आने वाले कोली साहब आज समय पर अपने आसन पर विराजमान हैं तथा चिढ़चिढ़े न रहकर सभी का हँसते हुए, मुस्कुराते हुए अभिवादन कर रहे हैं। सहकर्मियों को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उनको क्या मालूम था कि यह उनका अंतिम नमन है।

कार्यालय से बाहर निकलकर, श्री कोली जी ने भरपूर निगाहों से अपनी कार्यस्थली इमारत को देखा, जहां पर इन्होंने अपने सेवाकाल के दौरान कई खुशनुमा वर्ष व्यतीत किए थे। भारी मन से मेट्रो में सवारी करते हुए आई.टी.ओ. के स्टेशन पर उतकर पैदल ही चल दिए यमुना नदी के ऊपर स्थित पुल से छलांग लगाने।

श्री कोली ने अंतिम बार प्रभु का स्मरण किया और पुल के किनारे लगी रेलिंग पर चढ़ने का प्रयास करने लगे, ताकि निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। जब वह नदी में कूदने ही वाले थे तभी अचानक से उनके पास से एक वाहन गुजरा, जिस पर कई तरबूज लदे हुए थे। उस ट्रक से एक मोटा तरबूज उछलकर गिरा और कोली जी के पैरों से आ टकराया।

श्री कोली जी को ध्यान में आया कि आज प्रातः जल्दबाज़ी में नाश्ता करना ही भूल गए हैं तथा भूखे पेट आत्महत्या करने से वह कहीं प्रेतयोनि में न चले जाए और मोक्ष–प्राप्ति को भी तरसें। अतः वह रेलिंग से नीचे उतर आए और गोल–मटोल तरबूज़ को खाने की इच्छा से उसे अपने हाथों में उठाकर देखा।

तरबूज दिखने में काफी शानदार था, परंतु उसे काटने के लिए चाकू की आवश्यकता थी, जो उस समय कोली जी के पास नहीं था। अचानक से उन्हें एक तरकीब सूझी और तरबूज़ को पटरी पर पटक दिया, जिससे वह दो बराबर भागों में विभक्त हो गया।

अरे ये क्या! तरबूज़ के टूटते ही उसमें से लाल–पीली–काली रोशनी निकलने लगी तथा गर्जना के साथ एक जिन्न प्रकट हो गया, जिसे देखकर कोली जी डरकर पसीने से तर हो गये। क्या हुक्म है मेरे आका– जिन्न ने हाथ जोड़कर कहा। कोली जी ने दबी जुबान में जिन्न से पूछा तुम कौन हो और मेरे लिए क्या कर सकते हो? जिन्न ने कहा कि मैं इस तरबूज़ का जिन्न हूं, इसमें रहता हूं तथा आपकी इच्छा को पूर्ण कर सकता हूं।

श्री कोली जी ने साहस बटोरकर जिन्न को अपनी सम्पूर्ण व्यथा बताई तथा जिन्न से समस्या के निवारण हेतु ऐसे घर की मांग रखी, जिसमें किसी भी प्रकार का कोई बिल अदा न करना पड़े। बिजली फ्री, पानी फ्री, किराया फ्री, हाउस–टैक्स फ्री तथा सभी सुख–सुविधाओं से सुसज्जित कार्यालय के बिल्कुल समीप हो ताकि यातायात से उत्पन्न होने वाले व्ययों से भी पूरा–पूरा बचा जा सके यानि हींग लगे न फिटकरी–फिर भी रंग चोखा आए।

अब आप उत्सुकता में होंगे कि जिन्न का अगला कदम क्या हुआ होगा? उसने क्या किया? जिन्न ने कोली साहब की बात को सुनकर एक जोरदार झटका लिया और उन्हें बहुत बढ़िया सेल्यूट करते हुए कहा वो भी अंग्रेजी भाषा में – EXTREMELY SORRY SIR ! यदि मेरे पास भी कोई छोटा–मोटा मकान रहने के लिए होता तो क्या मैं तरबूज में रहता!

इसके बाद वह जिन्न गायब होकर वापिस तरबूज़ में घुस गया। जिन्न के वचनों को सुनकर श्री विजय कुमार कोली को हृदय आघात आया तथा उनके प्राण पखेरू उड़ गए। आज श्री कोली की तरह उनकी संताने भी विभिन्न स्थानों पर नौकरी कर रही है तथा उनको करीब – करीब भूल चुकी है, हां उनके नक्शे–कदमों पर चलना नहीं भूली तथा उनकी तरह ही हर रोज़ बिलों का भुगतान समय पर कर रही है।

–विजय कुमार कोली
अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

"कोरोना का कहर"

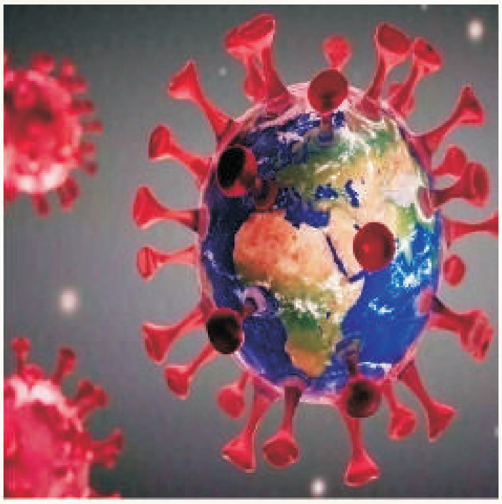

खामोशियों का दौर था
कहर चारों ओर था।
किसी के सपने ले गया
तो किसी के अपने ले गया।
एक अनजानी तबाही थी
किसी का सब कुछ ले गया।
गुरूर था चंद्र और मंगलयान का
अणु और परमाणु का।
एक कीड़े ने एक झटके में
सब कुछ बदल दिया।
लाचार और मजबूर कर दिया
विवश कर दिया सोचने पर।
हम आसमान चूमने चले थे
दो गज नीचे आ हम गए।
ना उसकी हद थी
ना कोई सरहद थी।
हाहाकार चारों ओर रहा
अमीर देखा ना गरीब
भारी सब पर बराबर रहा।
एक सबक सिखा गया
सावधान रहो, जागरूक बनो
स्वच्छता चारों ओर रखो।
चार दिन की जिंदगी है
प्यार मोहब्बत से जीना सीखो।

कब किसकी घड़ी आ जाए
अपनों से दो बातें कर लो।
वरना फिर खूब पछताओगे
क्योंकि महफिल वालों को
चार कंधे भी नसीब ना हुए।
कई सपने टूटे, अपने छूटे
और कई अपने पराए हुए।।

–श्री अशोक कुमार वर्मा
आशुलिपिक ग्रेड–डी, कर्मचारी चयन आयोग (रायपुर)

ऑनलाइन शिक्षा का दौर

शिक्षा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शिक्षा मनुष्य के चतुर्दिक विकास के लिए जिम्मेदार है। शिक्षा ही मनुष्य को इस पृथ्वी का सबसे स्मार्ट प्राणी बनाती है। किसी भी देश के समग्र विकास में शिक्षा का योगदान सबसे बड़ा होता है। वैसे तो शिक्षा प्राप्त करने के बहुत से पारंपरिक साधन हैं, पर आज के इस अत्याधुनिक युग में ऑनलाइन अथवा डिजिटल माध्यम शिक्षा का सबसे लोकप्रिय साधन बन गया है। ऑनलाइन शिक्षा को लोकप्रिय बनाने में कोरोना महामारी का भी बड़ा योगदान है, कोरोना महामारी के कारण लगभग पूरी दुनिया में लॉकडाउन लगा दिया गया और इसका सबसे अधिक प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में पड़ा। शैक्षिक संस्थानों को बहुत दिनों तक बंद नहीं रखा जा सकता था, ऐसा करना विद्यार्थियों के भविष्य के लिए घातक हो सकता था। ऑनलाइन/डिजिटल शिक्षा ने शिक्षक और छात्रों को इस समस्या से छुटकारा दिलाया और सीखने और सिखाने का एक बेहतरीन और सुरक्षित (कोरोना महामारी से) माध्यम प्रदान किया। ऑनलाइन शिक्षा ने कोरोना महामारी के समय एक वरदान के रूप में कार्य किया जो निरंतर जारी है।

ऑनलाइन शिक्षा आज सिर्फ उच्च शिक्षा तक सीमित नहीं रही आज नर्सरी और माध्यमिक स्तर की शिक्षा भी ऑनलाइन/डिजिटल माध्यमों से सफलतापूर्वक दी जा रही है। डिजिटल माध्यमों ने शिक्षक और छात्र की दूरी को मोबाईल और कंप्यूटर के स्क्रीन में समेट कर रख दिया है। ऑनलाइन माध्यमों से विद्यार्थी अपने शिक्षक के साथ निरंतर संपर्क बनाए रख सकता है और किसी भी समय किसी भी शैक्षिक समस्या के समाधान के लिए अपने शिक्षक के साथ संपर्क कर सकता है। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को कहीं जाना नहीं पड़ता, इससे उनको समय और पैसों दोनों की बचत होती है, जिसका उपयोग वे अन्य कार्यों के लिए कर सकते हैं और अपने समय के अनुसार भी शिक्षा प्राप्त कर सकते है। ऑनलाइन शिक्षा का एक फायदा यह भी है कि वे ऑनलाइन क्लास की विडियो रिकॉर्डिंग भी रख सकते है जिसका उपयोग बाद में भी कुछ समझने के लिए कर सकते है। ऑनलाइन शिक्षा का एक लाभ यह भी है कि छात्र को अपने अध्ययन से संबन्धित सभी सामग्री घर बैठे ही डिजिटल रूप में प्राप्त हो जाती है। ऑनलाइन शिक्षा उनके लिए भी वरदान साबित हुई है जो काम करते हुए अपनी पढ़ाई भी जारी रखना चाहते थे। आज वे ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अपनी सुविधानुसार पढ़ाई कर पाते है और संस्थान उन्हें

ऑनलाइन पाठ्यक्रम का प्रमाण–पत्र भी प्रदान करते है।

ऑनलाइन शिक्षा अब सिर्फ शैक्षणिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं है बल्कि अब ऑनलाइन माध्यम से नृत्य, गायन, कुकिंग, सिलाई, कढ़ाई, कला से संबन्धित इत्यादि विषयों को भी सीखा जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ तो बहुत हैं साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिससे पार पाना बहुत जरूरी है तभी ऑनलाइन शिक्षा विकल्प के रूप में नहीं बल्कि एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित हो पाएगी। ऑनलाइन शिक्षा के लिए जो प्राथमिक जरूरत पड़ती है वह है इन्टरनेट। जब तक इन्टरनेट आखिरी व्यक्ति तक नहीं पहुँच जाता तब तक यह सफल नहीं माना जा सकता। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर काम करना होगा, जैसे आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे जरूरी ऑनलाइन उपकरण, लैपटॉप, एंड्रॉयड मोबाइल फोन आदि लेने में असमर्थ होते है, सरकार को ऐसी व्यवस्था बनाने की जरूरत है जिससे इन गरीब छात्रों को यह उपकरण प्राप्त हो सके जिससे यह छात्र भी ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में दूसरे छात्रों के साथ आगे बढ़ सकें। जो बच्चे ऑनलाइन शिक्षा को पाने में असमर्थ हैं उनके लिए निशुल्क ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था करने की ज़रूरत है ताकि शिक्षा से कोई वंचित ना रहे।

ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हमारी वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने PMeVIDYA नामक प्रोग्राम की शुरुआत की। PMeVIDYA के अंतर्गत 100 विश्वविद्यालयों द्वारा ऑनलाइन कोर्सेज की शुरुआत करने की योजना है। इसमें केंद्र और राज्य सरकार द्वारा DIKSHA PORTAL के माध्यम से स्कूली शिक्षा पर जोर दिया गया है। 1 से 12 कक्षा के छात्रों को "वन नेशन–वन प्लेटफॉर्म" के तहत ई–कंटेंट और QR कोड आधारित किताबें मुहैया कराई जाएगी। "वन नेशन–वन प्लेटफॉर्म" में पढ़ाई के लिए रेडियो, कम्युनिटी रेडियो और पॉडकास्ट्स के जरिए शिक्षा ग्रहण करने पर ज़ोर दिया जायेगा। इसके साथ ही डिजिटल इंडिया, ई–बस्ता, पढ़े भारत ऑनलाइन जैसे अन्य अभियानों की शुरुआत की गई है जो कि इस क्षेत्र में प्रभाव पूर्ण कदम है।

ऑनलाइन शिक्षा के लिए छात्रों के साथ–साथ शिक्षकों के सामने भी अनगिनत चुनौतियाँ है जिसका समाधान होना भी बहुत जरूरी है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए शिक्षकों को तकनीकी शिक्षण प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, क्योंकि आज भी सभी शिक्षक तकनीक का पूर्णतः उपयोग करना नहीं

जानते। छात्र की सफलता में एक शिक्षक का बहुत बड़ा योगदान होता है, इसलिए शिक्षकों को भी हर संभव मदद देने की जरूरत है। इसके लिए सरकार द्वारा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) और एनसीईआरटी को पूरा प्लान तैयार करने का कार्यभार सौंपा गया है।

अतः निष्कर्ष यह है कि अगर ऑनलाइन शिक्षा के लिए हर जरूरी कदम उठाया गया तो विकल्प के रूप में शुरू किया गया यह माध्यम भविष्य में एक सशक्त माध्यम बन जाएगा जो शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाने वाला साबित होगा।

–अरुण कुमार गुप्ता
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

भाषा, मातृभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर

दिव्य हिन्दी

भाषा	मातृभाषा	राजभाषा	राष्ट्रभाषा
उच्चरित ध्वनि संकेतों का समूह जिससे किसी जाति व देश के लोग अपने भावों और विचारों को बोलकर और लिखकर प्रकट करते हैं। भाषाएं राष्ट्रों की वंशावलियां होती हैं।	वह भाषा जिसे बालक मां की गोद में रहते हुए सीखता है अर्थात मां से ग्रहण की गई भाषा। बालक के बौद्धिक विकास के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।	राज-काज और शासन तंत्र की भाषा जिसका राज्य के कार्य के लिए प्रयोग होता है। सभी सरकारी दस्तावेज राजभाषा में होते हैं।	राष्ट्र के बहुसंख्यकों के द्वारा बोली और समझे जाने वाली भाषा। जिसका अध्ययन समस्त देश के लिए अनिवार्य और गौरव का विषय होता है। राष्ट्रीय एकता की पहचान होती है।

divyhindi

दिव्य हिन्दी

'अस्मत'

लुट रही हैं बहू बेटियां, दरक रही अस्मत और तुम्हें असर तक नहीं
ख़तरे में है बाग ए चमन ए गुलिस्तां, और तुम्हें खबर तक नहीं।

कभी उजड़े हुए बाग के उस बुलबुल विहंगम से पूछ कर तो देखो
बसर तो बच गई जिनकी, पर जिंदगी का कोई मजहर तक नहीं।।

जिसने तोड़ा है, रौंदा है, मसल दी मासूम कली मेरे चमन की।
उसके चेहरे का नूर देखो, कानून के खौफ का मंजर तक नहीं।।

कुदरत से खौफ खाओ ऐ बशर, तू इंसान है, खुदा तो नहीं,
बददुआओं का असर इस कदर होगा, कब्र तक मिलेगा कोई हमसफ़र तक नहीं।।

बुदबुदाती जुबान से सुना था, उस अबला के कोख में एक सुता पल रही है।
पर सहमी सी उस धिया की, वसुन्धरा पर आने की खबर तक नही।

पतझड़ की रैना कब की बीत गई, नए कोपल की कोई खबर तक नहीं।
जो मर गए तो हजारों आंसू बहा गए, जो जिंदा बचे हैं उसकी कदर तक नहीं।।

नारी मां है, बेटी है, बहन है, बहू भी है, भार्या भी है, हमारी भी है, तुम्हारी भी है।
जो लुट गई नारी की अस्मत, तो फूटी किस्मत हमारी भी है, तुम्हारी भी है।

– राम सागर पंजियार
अनुभाग अधिकारी गोपनीय–I/I,
कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

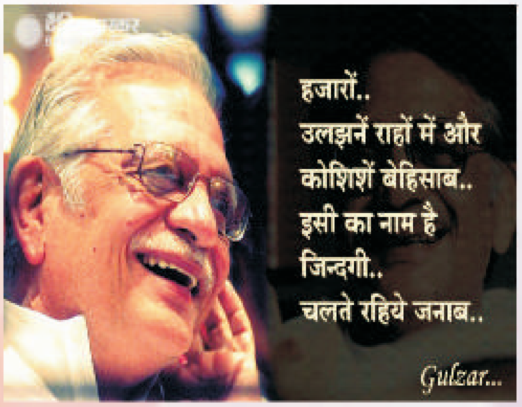

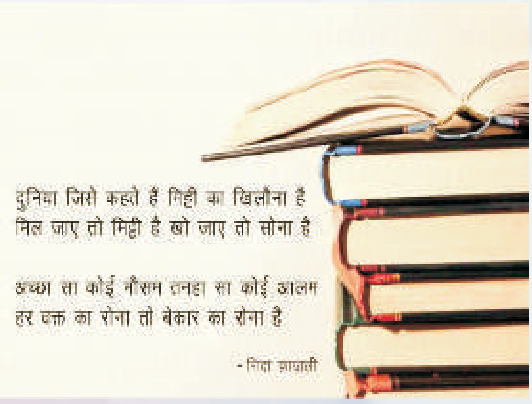

युद्ध करना पड़ता है

कुछ भीतर तो कुछ बाहर युद्ध करना पड़ता है,
पवित्र बनने के लिए सब शुद्ध करना पड़ता है.
जीवन को कभी भी कुरुक्षेत्र से कम न समझें,
प्रभु को पाने के लिए खुद को बुद्ध करना पड़ता है.
अकेले ही चलना पड़ता है सच्चाई के पथ पर,
कठिन है, सारे जग को विरुद्ध करना पड़ता है.
अपने लिए ही सब किए, सामान जिये ना जिये,
आने वालों का मार्ग अनिरुद्ध करना पड़ता है...

हौंसला

लाख दलदल हो, पाँव जमाए रखिए,
हाथ खाली ही सही, ऊपर उठाए रखिए,
कौन कहता है छलनी में पानी रुक नहीं सकता,
बर्फ बनने तक, हौंसला बनाए रखिए,
जब हौंसला बना लिया ऊंची उड़ान का,
फिर देखना फिजूल है क़द आसमान का।

– तसलीमा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

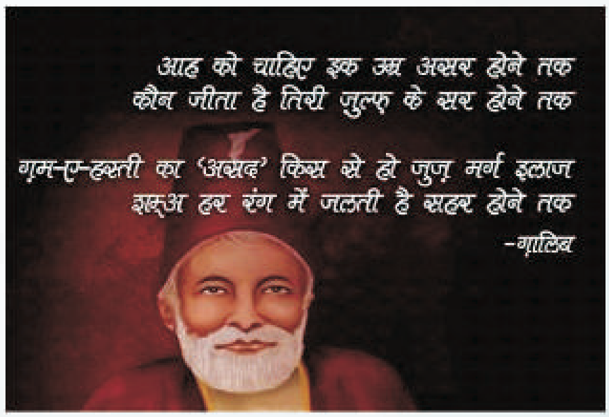

खम्ब थोईबी – एक मणिपुरी लोक नृत्य

लोक नृत्य लोगों द्वारा विकसित एक नृत्य है जो एक निश्चित देश या क्षेत्र के लोगों के जीवन को दर्शाता है। यह नृत्य, आमतौर पर एक प्रकार का नृत्य है जो एक स्थानीय भाषा, मनोरंजक, अतीत या वर्तमान संस्कृति की अभिव्यक्ति है। खम्ब थोईबी मणिपुर का एक बहुत प्रसिद्ध लोक नृत्य है। यह मैतेई संस्कृति (Meitei Culture) का एक युगल नृत्य है जिसे या तो लाई हराओबा में (लाई हराओबा मैतेई लोगों से जुड़ा एक त्योहार है, जो सनामही धार्मिक परंपरा वाले देवता उमंग लाई को खुश करने के लिए मनाया जाता है) या एक स्वतंत्र प्रदर्शन के रूप में किया जाता है। खम्ब और थोईबी असल में दो पौराणिक पात्र हैं जो मणिपुरी लोक कथाओं में अमर हैं।

खम्ब मोइरंग वंश के थे। अपने माता–पिता की मृत्यु से पहले उसे उसके मामा को सौंप दिया गया था, जो न तो लड़के के प्रति स्नेही था और न ही उसकी उचित देखभाल करते थे। उसको उचित शिक्षा नहीं मिली, लेकिन उन्होंने खेल और क्रीड़ा जैसी अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, जो अन्य लड़कों के लिए ईर्ष्या का कारण था। उसकी पहुंच चिंगुबा के महल तक थी, जिसकी थोईबी नाम की एक खूबसूरत बेटी थी और धीरे–धीरे खम्ब और थोईबी को एक–दूसरे से प्रेम हो गया। लेकिन उनके प्रेम कहानी का दुखद अंत हो जाता है।

खम्ब और थोईबी नृत्य प्रदर्शन

खम्ब और थोईबी के नृत्य को प्रदर्शित करने के लिए पुरुष और महिला दोनों नर्तक पारंपरिक मणिपुरी कपड़े पहनते हैं। इनके सिर पर मोर का पंख होता है। पुरुष और महिला दोनों ही ऊपर काले रंग की चोली

पहनते हैं लेकिन महिला नर्तक नीचे मयेक नायबा फनेक (कमर के चारों ओर बांधने वाला रंगीन पहनावा) पहनती है और पुरूष अलग–अलग रंग का फैजोम (धोती) पहनता है। वे अपनी कमर के चारों ओर बांधने के लिए एक अलग कपड़े का भी उपयोग करते हैं। महिला नर्तकी अपने हाथों में रंगीन पोशाक और फूलों से खुद को सजाती हैं। दोनों नर्तकियां अपने गलों को फूलों की माला से सजाते हैं।

गीतात्मक और लयबद्ध विविधताओं के साथ एक पूरे समूह के साथ नृत्य अपने आप में पूरा होता है। इस नृत्य में दोनों नर्तकियों के हाथ शुरुआत में धीरे–धीरे चलते हैं और उनके पैर संगीत की धीमी गति के साथ ऊपर–नीचे होते हैं। देवताओं और दर्शकों को एक नमन (नमस्कार) के साथ प्रदर्शन समाप्त होता है, और अंत में हाथों की हथेलियों पर सिर को छूकर उन्हें जमीन पर टिका दिया जाता है।

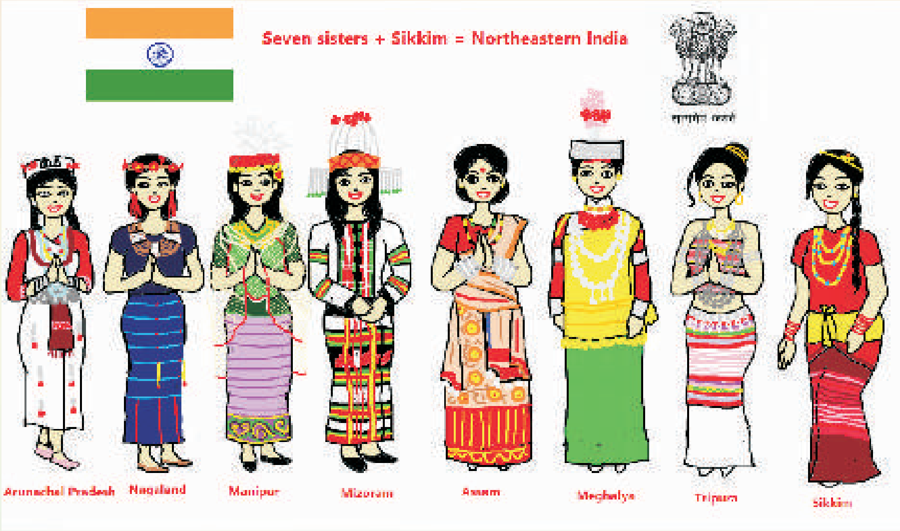

खम्ब और थोईबी नृत्य को विभिन्न भागों में बांटा गया हैं। नृत्य के पहले भाग में खम्ब के बड़े होने तक के वर्ष का समय, थोईबी के साथ उसकी मुलाकात और कैसे उसे उससे प्रेम हो जाता है, उन सभी को दर्शाया गया है। एक पागल हाथी के साथ खम्ब की लड़ाई, उसकी बिस्तर पर पड़ी हालत और उसके लिए थोईबी की देखभाल तक यह नृत्य पूर्णतः फैला है। यह युगल नृत्य भगवान शिव मंदिर के समक्ष प्रदर्शित किया जाता है।

लोइकुम लोइकब के नाम से जाना जाने वाला दूसरा प्रसंग बताता है कि कैसे थोईबी अपने पिता, उसके देश–निकाला, खम्ब द्वारा अपने संघ में उसको सुरक्षित रखना और नोंगबान की मृत्यु कैसे हो जाती है। इस भाग में सबसे महत्वपूर्ण नृत्य वह है जो बर्मी प्रमुख के दरबार में थोइबी द्वारा किया जाता है। नाटक का अंतिम भाग खम्ब और थोईबी के सुखी वैवाहिक जीवन के चित्रण के साथ शुरू होता है और खम्ब और उनकी प्रेम कहानी के दुखद अंत के साथ समाप्त होता है। समय के साथ राधा और भगवान कृष्ण के दैविक प्रेम, खम्ब और थोईबी की दुखद प्रेम कहानी में परिवर्तित हो गया। नाटकों में अभिनय किए गए प्रसंग, लोक–कथा और गीत युगल की प्रेम कहानी को चित्रित करते हैं।

– सरस्वती सिंघा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, क.च.आ.(उ.पू.क्षे.)

जिन्दगी की हमसफ़र साइकिल

जिन्दगी कैसे दो पहियों पे चलती है, बता दिया था तुमने।
जब पहली बार गिरे थे ना, तभी उठना सिखा दिया था तुमने।
पीछे बैठा शख्स कभी बोझ नहीं लगता,
साथी का असली मतलब बता दिया था तुमने।
हर पेडल के बाद कम होती दूरी,
मेहनत और मंजिल का रिश्ता समझा दिया था तुमने।
शहर के विकट ट्रैफिक जाम से मुक्ति दिलाकर,
कार्यालय में समय पर पंहुचा दिया था तुमने।
कोरोना काल में यातायात के सभी साधन बंद होने पर,
साइकिल का मतलब समझा दिया था तुमने।
आएगा जो कुछ जिन्दगी में काम मेरे,
वो सब कुछ बचपन में ही सिखा दिया था तुमने।
तू साइकिल नहीं है, आज की जरुरत है,
आने वाली पीढ़ी की मांग है,
ये अहसास हम सब को करा दिया है तुमने।

–रामकेश मीणा,
सहायक अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है।
हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।

–श्री नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

आपदा से सीखें और सुरक्षित भविष्य की तैयारी करें

आपदा का तात्पर्य प्राकृतिक या मानव निर्मित कारणों से होने वाली दुर्घटना, आपदा या गंभीर घटना से है जिससे मानव के जीवन को संकट पैदा हो। इन आपदाओं से बड़े पैमाने पर हानि होती है। इस प्राकृतिक आपदा से मानव जीवन से लेकर, करोड़ो की संपत्ति का नुकसान होता है। इस क्षति से उभर पाना सरकार और प्रशासन के लिए बेहद मुश्किल भरा होता है। प्राकृतिक आपदाओं को रोका और समाप्त तो नहीं किया जा सकता, परंतु ऐसे उपाय अथवा आपदा प्रबंधन अवश्य किया जा सकता है जिससे हमारा भविष्य सुखमय हो। अब समय आ गया है कि हम इन प्राकृतिक विपदाओं/आपदा से सीखें और एक सुरक्षित भविष्य के लिए स्वयं को तैयार करें।

ये प्राकृतिक आपदाएं जैसे सुनामी, भूकंप, बाढ़, सूखा—अकाल, जंगलों में भीषण आग के कारण कई संपत्तियों का नुकसान होता है। कुछ वर्ष पूर्व केदारनाथ में आई प्राकृतिक आपदा ने अनेक जन—जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया था और इस आपदा में सैंकड़ों जानें चली गई हैं। उससे भी पूर्व देश के अनेक तटवर्ती इलाकों में आई भयंकर सुनामी ने हजारों लोगों को बेघर कर दिया था और सरकार को बड़े पैमाने पर राहत अभियान चलाना पड़ा था। अभी ये घटनाएं हम लोगों के मन—मस्तिष्क से विस्मृत भी नहीं हुई थीं कि हाल में उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदा ने पूरे देश को हिला कर रख दिया है। इस घटना/आपदा में अनेक लोगों ने अपनी जान गंवा दी है और सरकार द्वारा स्थानीय स्तर पर राहत के बड़े पैमाने पर अभियान चलाएं गए हैं।

प्राकृतिक आपदाओं से जान—माल की क्षति तो होती है, सड़कें बुरी तरह टूट जाती है, सड़क हादसें भी होते हैं, बड़ी—बड़ी इमारतें ज़मीदोज़ हो जाती है। सबसे महत्वपूर्ण तो यह है कि इससे पर्यावरण और ज्यादा प्रदूषित होता है। यह जरूरी है कि इन आपदाओं के असर को कम किया जाए और जान—माल की सुरक्षित बनाने के साथ—साथ पर्यावरण की सुरक्षा भी की जाए। इसके लिए हमें युद्ध—स्तर पर प्रयास करने होंगे। संक्षेप में कहा जाए तो हमें आपदा प्रबंधन के तौर—तरीके सीखने होंगे ताकि हम अपने लिए एक सुरक्षित भविष्य का निर्माण कर सकें। आपदाओं के नुकसान का अच्छी तरह से मूल्यांकन करना, संचार माध्यमों को फिर से ठीक करना, परिवहन और बचाव, सुचारु रूप से भोजन प्रबंध और पानी सेवन के इंतजाम, बिजली इत्यादि बहाल करना इत्यादि आपदा प्रबंधन के तौर—तरीके में शामिल हैं।

इन प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए वर्ष 2005 में सरकार ने आपदा प्रबंधन अधिनियम जारी किया। सरकार ने आपदाओं से रक्षा के लिए नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट की स्थापना की है। सरकार आपदा प्रबंधन तौर—तरीकों के बारे में स्थानीय लोगों और आम जनता को जागरूक कर रही है। इस मिशन में कई युवा संगठन जैसे एन सी सी, एन आर एस सी, आई सी एम आर इत्यादि अपना जरूरी दायित्व निभा रहे हैं। सरकार इन आपदाओं के असर को कम करने के उद्देश्य से निधि का इंतजाम भी कर रही है।

मेरे विचार से बार—बार बाढ़ आना आपदा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। जल स्रोत का यकायक

बढ़ जाना, बर्फ का अधिक पिघलना भी बाढ़ आने को प्रभावित करता है। बाढ़ के पानी से मिट्टी की उर्वरक क्षमता तक समाप्त हो जाती है। बाढ़ को रोकने के लिए वृक्षारोपण करना अनिवार्य है। अच्छी गुणवत्ता के बांध बनाना भी जरूरी है। बांध में जमा जल नदियों तक पहुंचकर तबाही मचाता है। इसके लिए उचित उपाय किए जाएं तो इसे रोका जा सकता है। बाढ़ से प्रभावित हो रहे इलाकों को पहचानकर उसे सूची में शामिल करना जरूरी है ताकि उचित प्रबंध हो सकें। इसी प्रकार सूखा भी एक भयानक प्राकृतिक विपदा है सूखे के दुष्प्रभावों को कम करने के लिए वर्षा का रोजाना उन क्षेत्रों में रिकार्ड रखा जाना चाहिए जहां अकाल जैसी दिक्कतें होती हैं। इसके लिए हमें जल–संरक्षण के उपाय करने होंगे। रेन वाटर हार्वेस्टिंग प्रक्रिया एक नई तकनीक है जिसका सभी पालन करें तो पानी की समस्या का स्थायी हल निकाला जा सकता है। इसी प्रकार भूकंप, सुनामी, आग आदि भी अन्य प्रकार की प्राकृतिक विपदाएं हैं। जिसका आपदा प्रबंधन प्रभावी तरीके से किया जाए तो भविष्य सुरक्षित बनाया जा सकता है। हाल ही में, कोरोना बीमारी भी आपदा के तहत वर्गीकृत की गई है। इस रोग ने संसार भर को अपनी चपेट में लिया है। सरकार अभी तक पूरी तरह से इस पर काबू नहीं पा सकी है।

निष्कर्ष के रूप में प्राकृतिक आपदाओं से बचना मुश्किल है परंतु प्रभावी तौर पर निवारक उपाय/आपदा प्रबंधन किया जाए तो हम अपना भविष्य सुरक्षित और सुखमय बना सकते हैं।

–करण तनेजा
सुपुत्र–राजेश तनेजा
उप निदेशक (राजभाषा)

काँच का दरवाज़ा

बचपन से जवानी के बीच एक बड़ी ही अल्हड़ उम्र आती है किशोरावस्था की। वो 15–17 साल की उम्र जिसमें बचपन की मासूमियत और जवानी का जोश भरा होता है। इस कच्ची उम्र में हमारे मन में कुछ ज़्यादा ही चुस्ती फुर्ती होती है और हम अपने आप को दुनिया से ज़्यादा होशियार मानते हैं। यह उम्र ही है जिसमें फ़िल्मी हीरोईन जैसे बालों को झटकने का अपना मज़ा है। इसी उम्र में दुपट्टा लहराये और शायद किसी हसीन अजनबी की कलाई घड़ी में अटक जाए ऐसे अव्यवहारिक सपने बुने जाते हैं। और मैं इन सब से अछूती नहीं रही।

बात कोई स्मार्टफ़ोन के दादा के जमाने की है। उस समय सैमसंग कम्पनी के वो फ़्लिप वाले मोबाइल फ़ोन बाज़ार में नए आए थे। और पहली बार टीवी पर विज्ञापन देखा तो वो फ़ोन मेरी आँखों में बस गया। और फिर मंसूबे बनने लगे ख़ुराफ़ाती दिमाग़ में। 12वीं की परीक्षा नज़दीक थी तो यह पता था की अभी पापा मम्मी मुझे फ़ोन नहीं दिलाएँगे। तो मम्मी को मस्का लगा कर उन्हें नया फ़ोन लेने के लिए मना लिया। पापा भी तैयार हो गए। तय हुआ कि नीयत दिन पास के ही मॉल में मोबाइल की जो बड़ी वाली दुकान है वहाँ जा के देख परख के फ़ोन लिया जाएगा।

मॉल जाने के नाम से मेरा 17 वर्षीय मन खिल उठा। पढ़ाई में सदा मशगूल और कोई भी "फ़ालतू बातों" से दूर रहने वाली मैं मन के एक कोने में किसी दिन फ़िल्मी हीरोईन जैसे पेड़ों के चारों ओर घूम कर गाना गाने का सपना रखती थी। यह मेरा बड़ा गहरा राज़ था।

ख़ैर नीयत दिन मैं ज़रा सजधज के तैयार हुयी। आज भी याद है की पीले रंग का टॉप और जींस की स्कर्ट पहनी थी। अपने आप को आइने में देख अंदर से इतरा रही थी। स्मार्ट तो मैं थी ही पर उस दिन खुद को ऐश्वर्या राय से कम नहीं मान रही थी। ऐसा लग रहा था की बस आज तो क़हर मैं ही ढाऊँगी। ख़ैर अपनी स्मार्टनेस में गुम मैं मम्मी पापा के साथ मॉल पहुँची। एक मोटे काँच के दरवाज़े को बड़ा दम लगा के खोला और अंदर गए। कोई 7–8 लड़के वहाँ काम कर रहे थे। दो बहुत ही स्मार्ट से 25–26 साल के मैनेजर थे। और कुछ ग्राहक थे। हमारे जाने पर मैनेजर ने ही फ़ोन दिखाने चालू किए। उसने काफ़ी फ़ोन दिखाए पर मेरी नज़र तो उस फ़्लिप वाले फ़ोन पर ही थी। आख़िरकार पापा मम्मी ने उसी फ़ोन को चुन लिया। पर उस समय दो तरह की सिम आती थी। सी.डी.एम.ए. और जी.एस.एम.। मम्मी के पास सी.डी.एम.ए. फ़ोन था और पसंद किया गया फ़ोन जी.एस.एम. था तो नया नम्बर लेने की बातें होने लगी। पास ही की एक दुकान पर सिम मिलती थी तो वहाँ पूछने की बात हुई।

चूँकि मैनेजर स्मार्ट था तो मेरा किशोरी मन कहीं ना कहीं उसे प्रभावित करना चाहता था। तो ऐसे ही

फ़ोन को खोल कर थोड़ा स्टाइल मार रही थी। पर उसका ध्यान मेरी ओर नहीं था। जब नयी सिम की बात हुई तो मैंने उत्साहित हो कर कहा की मैं जा कर पूछ कर आती हूँ। अब मेरे पास मौक़ा था और मैंने बस सोचा की मौक़े पर चौका लगाया जाए। तिरछी मुस्कान के साथ मैं एक पैर पर अपनी ज़ुल्फ़ों को जोर से झटक कर घूमी और कैटवॉक करती हुई आगे बढ़ी। मेरे मन की आँखों में ऐसा लग रहा था कि बस सब नज़रें मुझ पर ही हैं और जैसे सारा मंजर स्लो मोशन में हो रहा हो। वो मेरी तिरछी मुस्कान जब तक मेरी आँखों तक पहुँच पाती और मेरी मन की आँखों की जगह मेरी तन की आँखें देख पाती उससे पहले ही एक ज़ोरदार धम्म की आवाज़ हुई और सब ओर सन्नाटा छा गया। जितनी तेजी से मैं मुड़ के गयी थी उतनी ही तेज़ी से उस मोटे काँच के दरवाज़े से भिड़ कर पीछे हो गयी। 2 मिनट के लिए सन्नाटा पसर गया और फिर दुकान में काम करने वाले सभी लड़कों के चेहरे पर हंसी आने लगी और वो एक एक करके बाहर जाने लगे। अपनी हँसी को दबाते पापा मेरी तरफ़ बढ़ें और देखने लगे कि कितनी चोट आयी पर मम्मी तो अपनी हँसी रोक ही नहीं पायीं और ज़ोर ज़ोर से हँसने लगीं। और जब सामने खड़े हैंडसम मैनेजर ने हँसी दबाते हुए खिल्ली उड़ाती हुई मुस्कान दी तब तो मेरा 17 साल का दिल चकनाचूर ही हो गया। मन और तन दोनो की आँखों से आँसू निकलने लगे। पापा को लगा चोट का दर्द है तो वह ज़्यादा ही साफ़ काँच और दुकान को दोष देने लगे। अब पापा को कैसे बताती की आँसू तो दर्द के है पर चोट दिल पर लगी थी। चौबे जी बनने चले थे छब्बे जी और रह गए थे दूबे जी। जहां मैं प्रभावित करने में लगी वहीं मैं हँसी का पात्र बन गयी। ख़ैर उसी वक्त दुकान के साफ़ सुथरे काँच के दरवाज़े पर 2–3 इश्तहार लगाए गए और हम फ़ोन ले के वहाँ से आ गए।

उस वक्त तो लगा की मैं इस घोर बेइज़्ज़ती से कभी मुक्त नहीं हो पाऊँगी। शायद उम्र ही ऐसी थी जब हर छोटी बात स्थायी लगती थी पर अब जब उस वाक़ये को याद करती हूँ तो हँसी रोके नहीं रुकती। हँसने पर वो 17 साल की सुरभि शायद आज भी मुँह फुला लेगी पर उस एक वाक़ये ने मुझे खुद पर और अपनी हास्यास्पद स्थितियों पर हँसना सिखा दिया।

– सुरभि सामरिया चितलांगी
सहायक अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (पश्चिमी क्षेत्र)

भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

–श्री अमित शाह (गृह मंत्री)

जीत भी जाऊँ तो क्या पाऊँगा

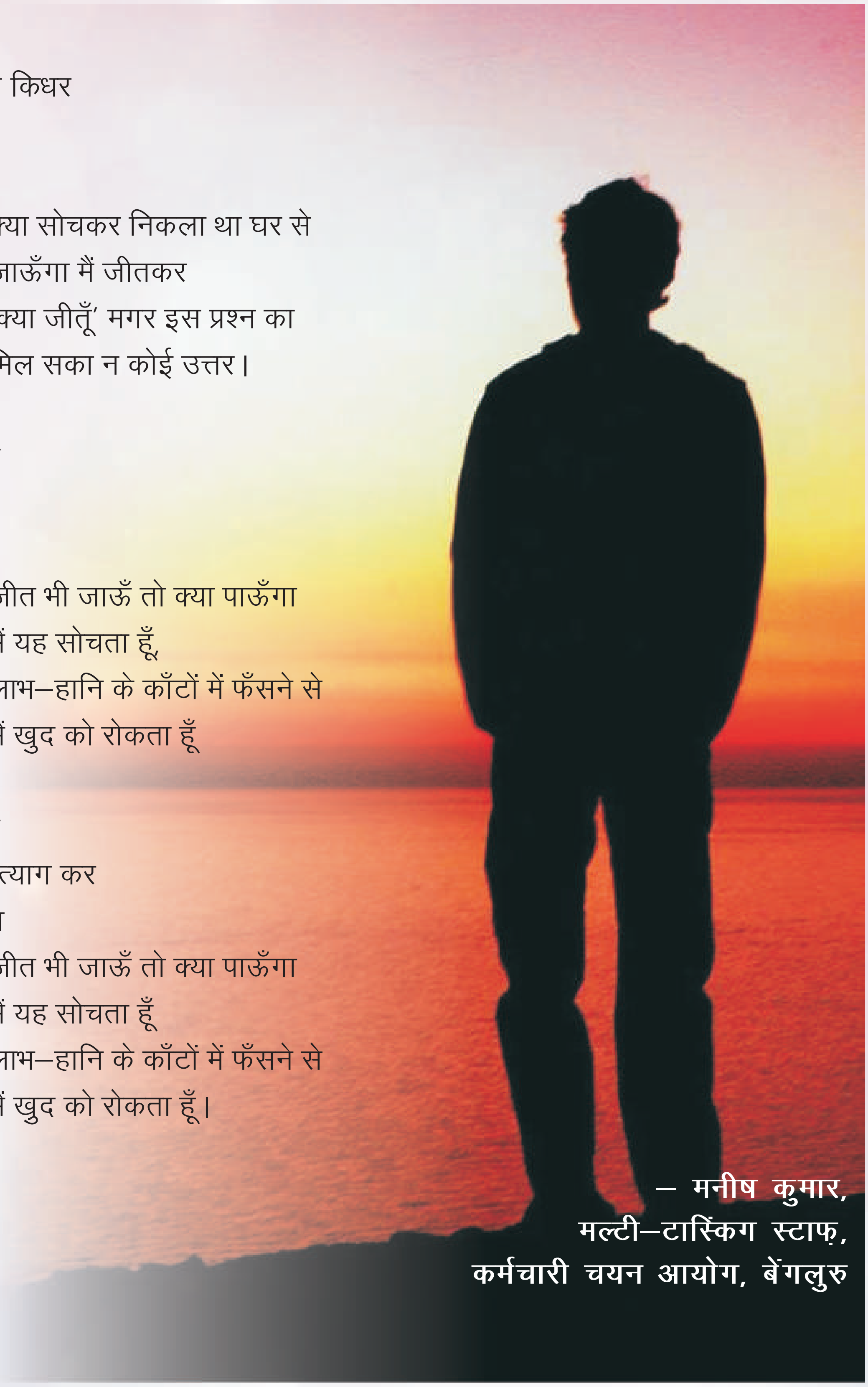

न मालूम मुझको
ज़िन्दगी जाएगी मेरी अब किधर
व्यर्थ जंजालों में फंसकर
मैं गया अब तक बिखर।

क्या सोचकर निकला था घर से
जाऊँगा मैं जीतकर
'क्या जीतूँ' मगर इस प्रश्न का
मिल सका न कोई उत्तर।

प्रश्न करता हूँ स्वयं से
क्यों है आवश्यक जीतना
प्रतिस्पर्धाओं में फंसकर
क्यों स्वयं को पीसना

जीत भी जाऊँ तो क्या पाऊँगा
मैं यह सोचता हूँ,
लाभ–हानि के काँटों में फँसने से
मैं खुद को रोकता हूँ

पाना न पाना है माया
प्रयत्न है अधिकार अपना
जीत–हार की चिता को त्याग कर
करना है अब कार्य अपना

जीत भी जाऊँ तो क्या पाऊँगा
मैं यह सोचता हूँ,
लाभ–हानि के काँटों में फँसने से
मैं खुद को रोकता हूँ।

– मनीष कुमार,
मल्टी–टास्किंग स्टाफ़,
कर्मचारी चयन आयोग, बेंगलुरु

डिजिटल माध्यमों/साधनों से बदलती दुनिया

भूमिका

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। यह वाक्य इस प्रसंग में काफी उपयुक्त है। पुराने ढर्रे पर चलते–चलते एक तो इंसान काफी ऊब जाता है और दूसरा समय के साथ–साथ व्यवहारिकता परेशानियाँ भी बढ़ जाती है। इस कारण परिवर्तन की मांग की जाती है ताकि जीवन को जहां तक हो सके सुगम बनाया जा सके तथा बदलते हालातों के परिप्रेक्ष्य में मानव–जाति की बेहतर सेवा की जा सके। जैसी शेष क्षेत्रों जैसे यातायात आदि में पहिये से लेकर हवाई जहाज की यात्रा संभव हो पाया है। इसी तरह से टाइपराइटर आदि से लेकर आज एडवांस कंप्यूटरीकृत सेवाएं दी जा रही है। जिससे कि कार्य बड़ी तीव्र गति से ही नहीं बल्कि कठिन तरह की गतिविधियां भी अब बड़ी आसानी से हो पा रही है। इसी संदर्भ में डिजिटल साधनों/माध्यमों का उपयोग आज के मानव के लिए वरदान साबित हुआ है।

विषय–वस्तु

डिजिटल माध्यमों/साधनों से मानव–जीवन में इतने परिवर्तन आए हैं कि दुनिया की शैली बिल्कुल बदल चुकी है। बेशक इन सब को यहां बतलाना मुमकिन नहीं होगा तथापि कुछेक बदलाव का यहां उल्लेख किया जा रहा है :–

(i) डिजिटल माध्यमों द्वारा सूचना, चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, की पहुंच बहुत आसान हो गई है। अब इंटरनेट के माध्यम से कुछ भी डाउनलोड/अपलोड किया जा सकता है। इससे पहले ये सब बहुत दिक्कत पैदा करता था तथा चीजों को भेजने तथा प्राप्त करने में काफी हद तक बदलाव आया है। गूगल आदि सर्च इंजनों द्वारा कोई भी उपयोगी सूचना/कागज एकदम से देखा जा सकता है। पहले इसके लिए किताबें खरीदनी पड़ती थी और जगह–जगह भ्रमण करना पड़ता था।

(ii) ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि ऐसे डिजिटल माध्यम है जिनके द्वारा अपना संदेश तुरंत जनता को पहुंचाया जा सकता है। नेता लोग इसका भरपूर प्रयोग करके अपनी बात शीघ्रता से दूसरों के समक्ष रख रहे हैं। इसी तरह से ई–मेल द्वारा भी पत्राचार करने से आसानी से तथा बिना लागत के कार्य सम्पन्न हो जाता है। अगर हम देखें तो पहले ऑफ लाइन पत्र भेजने में देरी ही नहीं लगती थी बल्कि कई बार पत्र इत्यादि भी गुम हो जाते थे। अतः कहा जा सकता है कि ट्विटर, ई–मेल आदि डिजिटल माध्यमों के चमत्कारिक परिणाम सामने आए हैं और दुनिया की कार्य पद्धति में बदलाव आया है।

(iii) ई–कॉमर्स/बैंकिंग सेवाएं इत्यादि डिजिटली साधनों ने इन क्षेत्रों में आश्चर्यचकित काम किया है और संसार को एक ग्लोबल गाँव बनाकर रख दिया है। अब ऑनलाइन शॉपिंग द्वारा सामान घर बैठे

मँगवाया जा सकता है और अपनी मनपसंद चीज बिना किसी दिक्कत के प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार बैंकों का कार्य भी जैसे पैसे जमा करवाना, निकलवाना, भेजना इत्यादि भी बड़ी सुगमता से किया जा सकता है।

(iv) अब पुराना रिकार्ड जोकि बेशकीमती है, आसानी से संभाला जा सकता है क्योंकि एक बार स्कैन करके उसकी अनेकानेक प्रतियां बनाई जा सकती हैं। इस तरह से उस रिकार्ड या कागज के नष्ट होने का खतरा भी कम हो जाता है। इसके साथ–साथ डिजिटल माध्यम से बहुत सारा डाटा इत्यादि एक जगह एकट्ठा किया जा सकता है और उसे प्रोसेसर से व्यवस्थित किया जा सकता है ताकि उसे सुगमता से प्रयोग में लाया जा सके।

(v) डिजिटल माध्यमों द्वारा अपराध या इसी तरह के दूसरे क्षेत्रों में भी अद्भुत बदलाव आए हैं। अब किसी भी अपराध को मोबाईल कैमरा द्वारा तुरंत रिकार्ड किया जा सकता है। इसे अपलोड करके यह पुलिस को अपराधी को पकड़ने में काफी मदद करता है। इसी तरह यातायात के नियम धड़ल्ले से तोड़ने पर भी अंकुश लगा है।

(vi) डिजिटल माध्यमों/साधनों द्वारा सरकार अब ई–गवर्नेंस की शुरुआत कर चुकी है जिससे कि नागरिकों को बड़ी ही सहूलियत से सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। बिलों का भुगतान, सब्सिडी की सीधे खाते में प्राप्ति, ऑनलाइन नगर पालिका सेवाएं, रेलवे आरक्षण, टैक्स आदि ऐसे कार्य है जहां लोगों को लंबी–लंबी कतारों में लगने से मुक्ति ही नहीं मिली है बल्कि भ्रष्टाचार पर भी काफी हद तक विराम लगा है।

(vii) इसके साथ साथ डिजिटल साधनों में रोजगार के भी बहुत अवसर पैदा हुए हैं तथा इस क्षेत्र में तरक्की भी बहुत है। इस क्षेत्र से भारतीय लोगों को बाहर विदेशों में जाने के भी काफी अच्छे अवसर मिले हैं और वे देश में भी वापस कमाई भेज रहे हैं जिससे कि सरकार की आमदनी भी बढ़ी हैं।

(viii) इन सबके अलावा और बहुत से क्षेत्र है जहां डिजिटल साधनों ने सचमुच क्रांति ला दी है जैसे संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि। डिजिटल साधनों ने इन क्षेत्रों में अपने योगदान से मानव–जीवन को बहुत आसान, सरल और किफायती बना दिया है। इस संदर्भ में, विशेष उल्लेख कोविड–19 का किया जाता है यहां डिजिटल माध्यम एक बहुत बड़ा वरदान साबित हुआ है। लोगों को डिजिटल साधनों की मदद से घर बैठे ही कार्यालय का काम करना संभव हो पाया है। इसके साथ–साथ अनेक तरह के मनोरंजन के साधन भी उपलब्ध हुए हैं। इसके अलावा डिजिटल माध्यमों/साधनों के ढेर सारे अन्य लाभ हैं जिनका वर्णन कर पाना संभव नहीं है।

निष्कर्ष

उपरोक्त तथ्यों तथा आम मत के आधार पर यह कहना सत्य होगा कि इन माध्यमों ने दुनिया की दिशा एवं दशा को इस हद तक बदल दिया है कि अब जीवन एक दम सरल तथा सुलभ हो गया है और समय का प्रबंधन भी सुचारु रूप से किया जा सकता है तथा थोड़े ही समय में बहुत सारे कार्य निपटायें जा सकते हैं। डिजिटल माध्यमों की बदौलत एक–दूसरे के साथ अनावश्यक संपर्क भी कम हुआ है जिससे कि झगड़े आदि पर भी विराम लगा है।

अतः डिजिटल साधनों ने दुनिया की तस्वीर को खूबसूरत बना दिया है लेकिन इसका उपयोग सावधानी से करना होगा ताकि अबाधित चीजों से बचा जा सके।

–राकेश कुमार
अवर सचिव
कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

(कर्मचारी चयन आयोग (मु.) में हिंदी पखवाड़ा, 2021 के अंतर्गत आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

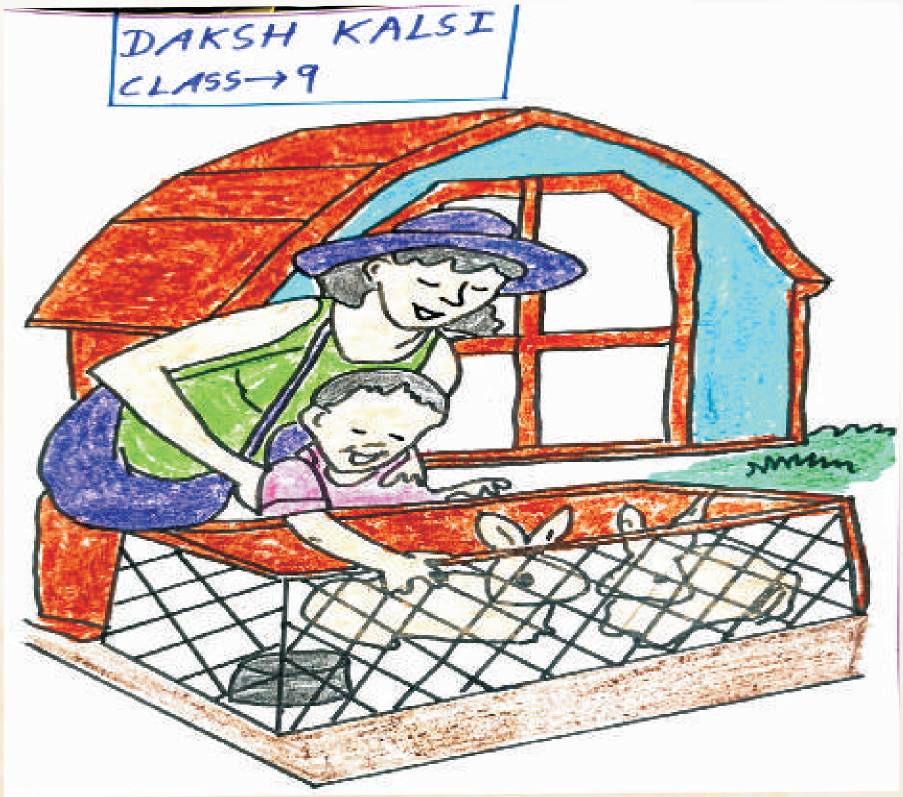

चित्रकारी–दक्ष कलसी, सुपुत्र सुश्री मोनिका रॉय, अवर सचिव, कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय)

सूरज

सूरज नाम के एक स्वस्थ तंदुरुस्त नौजवान को सरकारी नौकरी मिली। उसकी नियुक्ति की उसके कार्यालय में चर्चा होने लगी। सूरज एक ऐसा कर्मचारी था जो सबका भला करने के लिए हमेशा तैयार रहता था। कुछ दिनों में ही उसका नाम समाजसेवी के रूप में मशहूर हो गया। वह सबके साथ मिल–जुल कर रहने वाला व्यक्ति था। कार्यालय के काम में भी वह बहुत होशियार था। किसी को कोई भी समस्या होती तो वह हल करने के लिए सबसे आगे होता था।

कुछ दिनों बाद उसी कार्यालय में किरण नाम की एक युवती की भी भर्ती हुई। किरण स्वच्छ व मज़ाकिया किस्म की महिला थी। वह सबके साथ दोस्ती करती थी और प्रेम से ही बात भी करती थी। सूरज और किरण एक अच्छे दोस्त बन गए। दोनों को आपस में प्रेम की भावना भी होने लगी। दोनों आपस में एक परिवार की तरह रहते थे। जन्मदिन व त्योहारों में दोनों अपने परिवार के साथ एक दूसरे के घर जाते थे। दोनों का एक दूसरे के घर पर आना जाना होता था और एक दूसरे के परिवार से भी मुलाकात होती थी। दोनों के परिवार वाले भी इनकी दोस्ती को शादी में बदलने की बात कर चुके थे। दोनों की जोड़ी भी साथ में अच्छी लगती थी और उनकी शादी भी पक्की हो गई थी। कार्यालय के लोगों को भी इनकी जोड़ी अच्छी लगती थी। कार्यालय में कुछ लोगों को इनके मशहूर होने से ईर्ष्या होने लगी। हर काम में अन्य कर्मचारी और अधिकारी सूरज की प्रशंसा करते थे और उसका समर्थन करते थे। जिन्हें सूरज से परेशानी थी उन लोगों ने मिलकर सूरज के खिलाफ कुछ करने की योजना बनाई। उन्होंने एक झूठे भ्रष्टाचार की शिकायत सूरज के नाम पर कर दी और उसको किसी भी तरह फ़साने की कोशिश में थे। कार्यालय में सूरज के खिलाफ दिए गए मामले पर कार्यवाही होने लगी और उसकी पेशकश अधिकारियों के सामने हुई और उसको जेल भी भेजा गया। सूरज और किरण दोनों बहुत उदास व मायूस हो गए। सूरज सच्चा था इसलिए दोनों ने इस आरोप के खिलाफ लड़ने का निश्चय किया। कार्यालय के बहुत से लोगों ने उनकी मदद की।

लोगों की सहायता मिलने पर सूरज और किरण को एक नई हिम्मत और ऊर्जा मिली। सूरज और किरण ने पूरी ताकत से अपनी लड़ाई लड़ी। समाचार पत्रों में भी सूरज की समस्या की खबरें बन गई थीं। दोनों के घरवालों ने भी इनको पूरी तरह से समर्थन दिया। इस बुरे समय मे उन्होंने सूरज का साथ दिया और उसपर लगे आरोपों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। जैसे कहावत है कि ईश्वर सच्चे और अच्छे लोगों के साथ होता है जैसे सूरज के ऊपर जो आरोप था वह आरोप झूठा साबित हुआ और उसे जेल से रिहाई मिल गई।

सारे कर्मचारियों और अधिकारियों द्वारा सूरज के किए गए अच्छे कार्यों का पता चलने से सरकार द्वारा सूरज की तारीफ की गई और उसे समाजसेवी कार्यों के लिए प्रमाणपत्र भी दिया गया। सूरज और किरण के घरवाले भी बहुत खुश हो गए। दोनों के विवाह की तैयारियां शुरू हो गई। बहुत अच्छे से उनका विवाह हो

गया और दोनों ने एक नए जीवन की शुरुआत की। हर बुरे समय के बाद अच्छे दिन भी आते हैं। सूरज और किरण के अच्छे व्यवहार और अच्छे कर्मों की वजह से दोनों को एक अच्छा और नया जीवन मिल गया।

—अरुण कुमार हुई, स. अनुभाग अधिकारी
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

(कर्मचारी चयन आयोग (मु.) में हिंदी पखवाड़ा, 2021 के अंतर्गत आयोजित हिंदी कहानी प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषियों के लिए) में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कहानी)

> राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
>
> —महात्मा गांधी

सत्यनिष्ठा-वर्तमान समय की मांग

वर्तमान उहापोह की स्थिति को देखा जाए तब अनुमान लगाना सहज ही है कि सत्यनिष्ठा की कितनी आवश्यकता है। आज भारत आजादी के 75वें वर्ष की दहलीज़ पर खड़ा है और इसी के उपलक्ष्य में हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं परंतु हम आज भी उस सुनहरे भारत के सपने को संजो नहीं पाए हैं जिसकी कल्पना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने की थी या सदियों से जो भारत की छवि सोने की चिड़िया की रही है। इसी दिशा में हमें अभी और बहुत कुछ करने की जरूरत है, हम इस दिशा में अग्रसर हैं कि कैसे हमारा देश फिर से वही सोने की चिड़िया बन सके और हम आत्मनिर्भर भी हो सकें।

अब हम बात करते हैं अपने विषय की। यह सर्वविदित है कि सत्यनिष्ठा एक ऐसा गुण है कि उसे हर एक नियोक्ता, चाहे वह निजी क्षेत्र का हो या सरकारी, उसकी सबसे पहली मांग उसके कर्मचारी या अधिकारी से सत्यनिष्ठा की होती है। आइए, हम समझने की कोशिश करते हैं कि सत्यनिष्ठा आखिर है क्या और कैसे कोई नियोक्ता ईमानदारी और अपने चयन में सत्यनिष्ठा की चाह रखता है। इसे हम कुछ उदाहरणों से समझने की कोशिश करते हैं। सोनू और मोनू दो दोस्त हैं और दोनों ही सरकारी नौकरी करते हैं और वरिष्ठ अधिकारी हैं। सरकार एक बैठक बुलाना चाहती है उन दोनों अधिकारियों के समकक्षों की और उन से वरिष्ठ अधिकारियों की, लेकिन सरकार ने अनुमान किया कि इतनी गाड़ियों की व्यवस्था करने के बजाय सभी अधिकारियों को कहा जाये कि वे अपने आने की व्यवस्था स्वयं कर लें और उनके लिए एक धनराशि तय की जाये और वैसा ही किया गया कि कोई चाहे कैसे आए लेकिन उसको तय धनराशि माना 10,000 रूपये दी जाएगी उसके लिए किसी भी प्रकार का कोई बिल या अन्य दस्तावेज देने की आवश्यकता नहीं है। सोनू के पास गाड़ी थी और जैसे ही वह घर से निकला मोनू ने कहा कि मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूं, वे दोनों इस तरह सोनू की गाड़ी से बैठक में भाग लेते हैं। बैठक के समापन पर जब धनराशि देने का समय आता है तब सोनू अपने पैसे ले लेता है लेकिन मोनू मना कर देता है और कहता है कि मेरी कोई धनराशि खर्च ही नहीं हुई इसलिए मैं कोई धनराशि नहीं ले सकता। वहां का क्लर्क जिद करता है कि सर ये आपकी ही धनराशि है और कोई बिल भी आपको नहीं देना है। परंतु, मोनू बिल्कुल मना कर देता है और बिना कोई धनराशि लिए वापस आ जाता है। यदि यही व्यवहार वह सार्वजनिक और निजी दोनों जीवन में अपनाता है तभी हम इसको सत्यनिष्ठा कह सकते है। हां, यदि वह धनराशि स्वीकार कर भी लेता तब भी हम उसको बेईमान नहीं कह सकते। यदि वह इस व्यवहार को केवल सार्वजनिक जीवन में अपनाता है तब हम उसको सत्यनिष्ठ नहीं कह सकते। सत्यनिष्ठा बनाई गई विधियों, नियमों, कानूनों आदि के दायरों में सीमित नहीं वरन उससे भी अधिक है और हम यदि कल्पना करें कि प्रत्येक व्यक्ति सत्यनिष्ठ हो जाए तब कोई अपराध ही नहीं होगा और हमें किसी प्रकार के नियम कानूनों की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।

इन दो दोस्तों की तरह दो और दोस्त A और B एक ही गाड़ी में A की गाड़ी में साथ साथ आए थे परंतु B ने धनराशि ले ली। इसको हम ईमानदारी कह सकते हैं क्योंकि विधि अनुसार/नियमानुसार ही उसने वह धनराशि प्राप्त की और कोई विधि विरूद्ध कार्य नहीं किया।

सत्यनिष्ठा में व्यक्ति अपने सार्वजनिक जीवन के साथ साथ अपने व्यक्तिगत जीवन में भी सत्यनिष्ठा का पालन करता है परंतु शुचिता में वह अपने व्यक्तिगत जीवन में सत्यनिष्ठ नहीं भी हो सकता है। संविधान के समीक्षा कार्य पर राष्ट्रीय आयोग (National Commission to review the working of the constitution) द्वारा "शासन में शुचिता" (probity in governance) पर परामर्श पत्र जारी किया गया था। इसमें अनुशासन में रहने की अपेक्षा की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति से उसके सार्वजनिक जीवन में आशा की जाती है कि वह अनुशासन में रहेगा और विधि अनुसार, आचारसहिंतानुसार, नियमानुसार आचरण करेगा/करेगी।

यहां गौर करने वाली बात यह है कि सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति से सत्यनिष्ठा की अपेक्षा की जाती है परंतु कितने लोग सत्यनिष्ठ रह पाते हैं ऐसी कोई रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की जाती और न ही इस प्रकार का कोई सर्वेक्षण सामने आ पाता है। हालांकि, अंतर–राष्ट्रीय स्तर पर अनेक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती हैं जैसे– ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा भ्रष्टाचार बोध सूचकांक, लेकिन भारत के संदर्भ में ये पूरी तस्वीर प्रस्तुत नहीं कर पाती हैं।

हालांकि यह आवश्यक है कि सरकारी कर्मचारी या कोई सार्वजनिक जीवन वाला व्यक्ति जिसके खिलाफ भी भ्रष्टाचार की जांच की जाए, सबसे पहले उसकी सम्पत्ति की जांच की जानी चाहिए क्योंकि हर भ्रष्टाचार गतिविधि के पीछे कोई न कोई स्वार्थ/आर्थिक गतिविधि अवश्य होता/होती है। बिना स्वार्थ कोई भ्रष्टाचार गतिविधि नहीं होती। आज तो हम इसके लिए तकनीक का सहारा भी ले सकते हैं।

भारत में बहुत सारे नियम, कानून, विधियां अपराधों की प्रभावी रोकथाम के लिए बनाए और अधिनियमित किए जाते रहे हैं और किए जा रहे हैं जैसे – भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988, धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002, भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 आदि, साथ ही आवश्यक संशोधन भी समय–समय पर किए जाते रहें हैं, परंतु आवश्यकता है प्रभावी कार्यान्वयन की।

सार्वजनिक जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करना, कानून का उचित, निष्पक्ष और प्रभावी प्रवर्तन, उनका प्रभावी और निष्पक्ष कार्यान्वयन वास्तव में अनुशासन का एक अधिक महत्वपूर्ण पहलू है।

यह भी आवश्यक है कि व्यक्तियों को उनके अधिकारों के साथ–साथ कर्त्तव्यों से अवगत कराया जाए लेकिन यदि हम उन्हें सत्यनिष्ठ बना सकें तब हम एक ऐसे भारत की कल्पना कर सकते हैं जो सच में बहुत सुदंर होगा और यदि कहीं स्वर्ग सच में होगा तो वह यहीं होगा।

न कोई ऊंच–नीच, न भेदभाव, न भ्रष्टाचार, न बेईमानी, न कोई हिंसा, न कोई अपराध। हां, लेकिन यह भी सच है कि नागरिकों में अनुशासन और सत्यनिष्ठा पैदा करना अधिक कठिन कार्य है परंतु नामुमकिन नहीं।

हालांकि केंद्रीय सरकार ने काफी सारे भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यक्रम बनाए हैं लेकिन उन्हें गति देने की आवश्यकता है। भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण कार्यक्रम इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। आज अधिकतर योजनाओं का लाभ लोगों को उनके बैंक खाते में मिलने लगा है जिससे भ्रष्टाचार में बहुत कमी आई है जैसे किसान सम्मान निधि योजना, फसल बीमा सुरक्षा योजना, मनरेगा आदि।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सत्यनिष्ठा वर्तमान ही नहीं अपितु भविष्य के लिए भी आवश्यक है यदि हमारे देश को भुखमरी, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याओं से भी पार पाना है तो सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार जैसी चीज होनी ही नहीं चाहिए और भ्रष्ट अधिकारियों/सार्वजनिक जीवन वाले व्यक्ति को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। लेकिन उसके लिए हमारी जांच एजेंसियों को सतर्कता और निष्पक्षता से काम करना होगा ताकि कोई भ्रष्टाचारी बच नहीं पाए और कोई सत्यनिष्ठ, शुचितावान और ईमानदार परेशान न हो।

– कपिल कुमार, आशुलिपिक
कर्मचारी चयन आयोग (उत्तरी क्षेत्र)

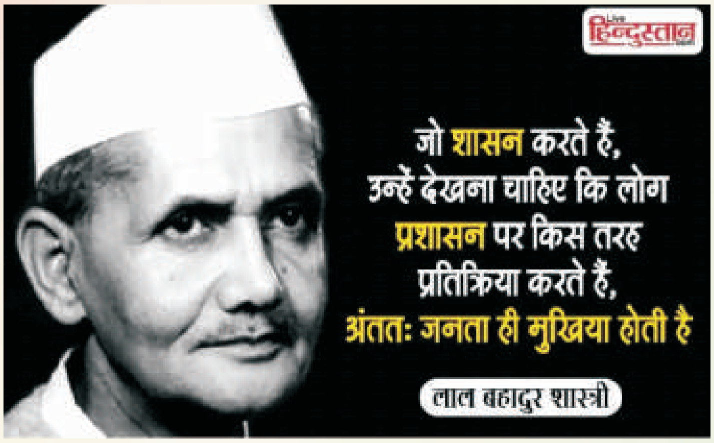

देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।
–रविशंकर शुक्ल

माँ की महिमा

माँ के कार्य हैं बड़े महान,
रखती हैं नित मुझ पर ध्यान।
चलना हमें वही सिखलाती,
हमें नहलाती, हमें खिलाती,
ड्रेस पहनाकर स्कूल पहुंचाती,
हममें ओज, उत्साह बढ़ाती।
माँ की ममता है बड़ी महान,
रखती हैं नित मुझ पर ध्यान।
स्वयं ना खाकर मुझे खिलाती,
मीठी–मीठी बात सुनाती,
चूम–चूमकर मन बहलाती,
अपनी गोद में हमें सुलाती।
माँ का चरित्र है बड़ा महान,
रखती हैं नित मुझ पर ध्यान।
चोरी करना नहीं सिखाती,
सच बोलना हमें सिखाती.
नीति की बातें हमें बताती,
सच्चा मानव हमें बनाती।
माँ की दया है बड़ी महान,
रखती हैं नित मुझ पर ध्यान।
प्रेम की बातें हमें सिखाती,
सब जीवों पर दया दिखाती।
अहिंसा का हैं पाठ पढ़ाती,
सत्य को अपना धर्म बताती।
भोली–भाली हैं मेरी माँ,
माँ की महिमा है बड़ी महान।

– देव नाथ यादव
(ई.डी.पी. शाखा)
कर्मचारी चयन आयोग (मु.)

14 जनवरी, 2021 को राजस्थान सरकार द्वारा गठित समिति का कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) का दौरा। इस अवसर की कुछ झलकियाँ

दिनांक 5 मार्च, 2021 को राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्यों का कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) के कमांड सेंटर का दौरा

कर्मचारी चयन आयोग मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा, 2021 का आयोजन

"ये हमारा सौभाग्य है कि समय ने, देश ने, इस अमृत महोत्सव को साकार करने की जिम्मेदारी हम सबको दी है... एक तरह से ये प्रयास है कि कैसे आजादी के 75 साल का ये प्रयोजन, आजादी का ये अमृत महोत्सव भारत के जन–जन का, भारत के हर मन का पर्व बने"

नरेन्द्र मोदी
भारत के प्रधान मंत्री

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली